ykd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

vuØe

v/;k;	fooj.k	i"B l0
1	ykd fo/kk dtyh&ykd vfHk0;fDr dh cgqjaxh lalkj dh foospukA	2&8
2	Hkkjrh; gfj'pUnz dk dtyh iqe ,d fo'ks"k nLrkosth lUnHkZ	9&26
3	ykd fo/kk dtyh dk ;qx cks/k ij lafo[;kr ykd dyk eeZK ykdfon Jh vrqy ;nqoa'kh ls laokn&lk{kkRdkj	22&27
4	ykd fo/kk dtyh ij ykd fpUrdksa lkfgR;dkjksa ds fopkj ,oa 'kks/kijd vkys[k	28&51
5	ykd fo/kk dtyh dk bfrgkl] orZeku ,oa Hkfo"; ij lqizfl) ykd fpUrd] vkykspd ikS0 cnzh ukjk;.k ls ckrphr	52&55
6	ykd fo/kk dtyh dh mi;kfxrk] egRo] foLrkj ,oa lkekftd psruk ij lqizfl) dtyh xk;dksa ls laokn	56&72
7	dtyh dk _rq cks/k] ijEijk&iz;kx&iz;klfxdrk dk 'kks/k lanHkZ	73&85
8	ykd fo/kk dtyh dk ogn v/;;u ,oa 'kks/kijkUr fo'ks"k lefdr fVIi.kh ,oa fu"d"kZ	86&88

ykd fo/kk dtyh&ykd vfHkO;fDr dk cgqjaxh lalkj dh foospuk

लोक विधा कजली को जाहिर तौर पर पूर्वी उत्तर प्रदेश विशेषतः मिर्जापुर, बनारस, चन्दौली, सोनभद्र, भदोही, जौनपुर, आजमगढ़ आदि क्षेत्रों और अवध प्रान्त से जोड़ा जा सकता है। परन्तु यह सन्दर्भ सम्पूर्ण नहीं है क्योंकि कजली निकली जरूर इन क्षेत्रों से और परम्परा और ऋतुओं से परन्तु आगे चलकर अपनें विभिन्न प्रकारों से और तमाम तरह के विकास के दौर से गुजरते हुये कजली राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक समरसता, पर्यावरण के तमाम संदर्भों को और सरोकारों को अपने में समाहित करती रही। ऋतु परम्परा जिसमें की उत्सव, उल्लास, उमंग और उर्जा का समावेश था उसी की कोख से गाँव देहात में अर्थोपार्जन को लेकर के जो विडम्बना और विसंगति रही उसने विस्थापना और पारिवारिक अलगाव को जन्म दिया जिसने कि विछोह, पीड़ा और टीस के स्वर को मुखर किया। निश्चित तौर पर ग्राम समाज की मौजूद अवधारणा रही होती तो हो सकता है इसका संदर्भ और दूसरी तरीके से होता। मगर फिर भी विस्थापना और विछोह तो जीवन का सत्य ही है क्योंकि हर बार सिर्फ रोटी और पानी की ही तलाश में आदमी नहीं निकलता या यूँ कहें कि जिन्दगी की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए ही अपनी जड़ जमीन से अलग नहीं होता बल्कि कई बार अपने को विकसित और सूचित करने के लिये नई दुनिया, नये लोग और नये संदर्भों से जुड़ने के लिए अपनी महत्वाकांक्षाओं को साकार करने के लिए भी घर से बाहर निकलता है। कहने का तात्पर्य यह कि विक्षोह और दूर जाने की स्थिति तब भी होती तो मनुष्य होने के नाते हमारे भीतर की संवदेना और भाव, हमारे भीतर का प्रेम और वात्सल्य तो जागृत होता ही और यही जागृति हमसे गीत लिखवाती है, हमसे कजली लिखवाती है। लोक विधा कजली की उत्पत्ति के कारण भले ही सीमित हों पर आज उसकी विषय वस्तु को देखते हुये उसका एक विस्तृत आकाश एक इन्द्रधनुषी छटा लिये हुये हमारे सामने उपस्थित है। कजली का यह बहुरंगी संसार लोकमन को उसकी अर्न्तचेतना से जोड़ते हुये उसकी मौलिक अभिव्यक्ति के नये संदर्भों को निरूपित करता है और सोच के धरातल पर एक मजबूत उपस्थिति दर्ज कराते हुये चलता है। आज कजली गाँव बस्तियों से लेकर

अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर स्थापित है। आज कजरी में जीवन का कौन सा दर्शन नहीं है। कौन सी बात नहीं है, जिसका उल्लेख नहीं होता हो। कजली के इस बहुरंगी संसार में आज सब कुछ है, आप नाम तो लीजिये। एक बात और आज जब हम इस आधुनिक जन संचार क्रान्ति और सूचना के युग मे जी रहे हैं तो सोशल मीडिया से लेकर न्यूज चैनलों तक का महत्व बहुत बढ़ जाता है। सीधी सी बात है हमारे घर की टी0वी0 स्क्रीन सीधे–सीधे लाखों करोड़ों, अरबों लोगों से संवाद करती है। हमारे हाथ में छोटा सा मोबाईल इस बड़ी दुनिया को एक स्क्रीन के माध्यम से हमारे सामने परोसा देता है। इस छोटी सी स्क्रीन जो कि टी0वी0 या मोबाईल की हो सकती है उसने कजली के प्रचार प्रसार में एक बड़ी भूमिका अदा की है। पद्मश्री सुविख्यात लोक गायिका मालिनी अवस्थी जी ने लोकगीतों और कजली को इन उपरोक्त वर्णित माध्यमों से और राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुतियों से घर–घर तक पहुँचा दिया है। अपनी कला को निखारने, सँवारने और बढ़ाने के साथ–साथ इस तरह से कला और संस्कृति की सेवा एक नई उम्मीद पैदा करता है। कजरी के इस बहुरंगी संसार को देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मानव जीवन का और सामाजिक जीवन का जिसमें लोक, परलोक, नदी, पहाड़, जंगल, झरना, पेड़ पत्ता, बादल, पशु, पक्षी, जानवर सब हैं सबकी अभिव्यक्ति आज कजली में है। आइये देखते हैं–

मौसम, ऋतु, श्रम, प्रेम, परिवार की सुन्दर अभिव्यक्ति करती हुयी यह कजरी–

रिमझिम बरसैले बदरिया, गुइयां गावैली कजरिया
भोर संवरिया भीजै ना, ओही घनवा के कियरिया।
भोर संवरिया भीजै ना।।

भलै तलवा पोखरिया, नाचे चेल्हवा मछरिया
भोर नजरिया भीजैना, भीजै अंखिया क पुतरिया

भोर संवरिया भीजै ना।।

लागल नखत अदरवा, देखु देखु रें बदरवा
मोर बखरिया भांजैना, भीजैं कोठवा अंटरिया

भोर संवरिया भीजै ना।।

भइले हरियर खिवनवाँ, लौटे भुइयां मैं सवनवां
भोर चुनरिया भीजैना, भीजै सइयाँ क पगरिया

भोर संवरिया भीजै ना।।

भीजै मांगिया के सेन्दुरवा, भीजै सोरहो सिंगरवा
फुलवरिया भींजै ना, सइयाँ खोला न केवरिया

भोर संवरिया भीजै ना।।

भीजैं दुधवा के कटोरिया, मोर मिसिरिया भीजै ना।

यह भी देखें कि कैसे प्रकृति के साथ जीव–जन्तु, मनुष्य, पर्यावरण सब एक साथ सांस लेने लगते हैं–

बोलै बनवाँ में मोरवा घेरैले बदरि
सारी धरती रंगावै गोइया घानी चुनरी
बोलै बनवाँ मैं...

जहाँ जहाँ जाले ऑख, ऑख बिछलाले
चारों ओरी ई है हरियरिया देखाले
घेरैं रहिया सहेलिया खेलैलीं कजरी

बोलै बनवाँ मैं...

धान क कियारी छूवै ताल क किनारी
नीक लागै मुहवाँ पे रस क फुहारा
भोर गोरू चरवहवा बजावै बंसुरी।

बोलै बनवाँ मैं...

नाहीं भावै कहना हमार समनुरिया
सोरहों सिंगार क पियार समउरिया
बड़ा पाजी बा पियरवा करैला रगरी।।

यह देखिये कजरी के माध्यम से जीवन के दर्शन का एक रूप जहाँ मन और अन्तर्चेतना की बात हो रही है–

सगुन चुनरिया कर जल्दी तैयार रे रंगरेजवा
सजध धज के जाबै ससुरार रे रंगरेजवा–

पिया की पाती पाते धड़के
हाथ रे जियरा मोर हो
जाऊगीं जब प्रेम नगर में
राह में मिलिहैं चोर हो
नइहर की सब मोरी कमाई
लइ जइहैं सब छोर हो
सास ननद सब ताना मरिहैं
लागब कउनै ओर हो
इसीलिये तो मैं कहती दिलदार रे, रंगरेजवा।
गुन क गहना नेम की नथुनी,
लेबै आठो अंग सवार
लगन के लटकन मन के मोती
गले बीच लटकइबै हार
माया मोह के मोहन माला
पहिर लेब सुन्दर नगदार
हया के हसुली भाव की बाजू
चेत की चोली बूटेदार
रचि–रचि के करवै सोरहो श्रृंगार रे, रंगरेजवा,
सरम की सारी पहिर लिया है
निज मन को समझाय के
चाह के चादर ओढ़ि के बैठब

आपन मुंह लुकवाय के
चित की चूड़ि कर में पहिरब
मनिहारिन बुलवाय के
करम के कंगन दूनों हाथ में
पहिर लेब बनवाय के
डोलिया पहुँची अब साजन के द्वारे रे, रंगरेजवा।

विरह, विक्षोह, पीड़ा और मानवीय संवेदना को अभिव्यक्ति करती यह कजली–

dtjh

हमें ना सवनवां सोहाय हो, सइयां परदेसवा में छाये।
हार गइली चिठिया पठाय हो, सइयाँ परदेसवा में छाये।
गरजै बदरवा औ चमकै बिजुरिया
नाहीं भावै तीज हमें भावै ना कजरिया
रहि–रहि जिया अगियाय हो
सइयाँ परदेसवा में छाये।
बनवॉ में मोर बोलै बिहरै करेजवा
पिया बेइमान नॉहि भेजैला सनेसवा
गोइया नॉहि बिरहा सहाय हो,
सइयाँ परदेसवा में छाये।।
नाही जाने राम मोर साध कब पूरी
होई जाई एक मन मिट जाई दूरी
मेहंदी कड़ फूल गमुराय हो
सइयाँ परदेसवा में छाये।।

निर्गुण के माध्यम से जीवन की क्षणभंगुरता को अभिव्यक्ति करती यह अविस्मरणीय कजली। यही तो सन्तो, महात्माओं का जीवन दर्शन रहा है जहाँ प्रेम तो अनन्त है लेकिन आसक्ति मना है–

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkosthdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

बीति जइहैं रतिया बिहान होई जाई
धीरे धीरे पिंजरा पुरान हाई जाई
जेहि दिन पिंजरा से उड़िहैं सुगनवा
मटिया में मिलि जाई सब अरमनवा
मन क सपनवा बीरान होई जाई
पाँच रतनवा से सजल पिंजरवा
चुनि चुनि गढ़िके बनउले सोनरवा
पाला सुगनवा सयान होई जाई
तन रूपि पिंजरा जतन करि रखिहा
आठ पहर हरि नाम रस चखिहा
नाही खड़ी खटिया उतान होई जाई

राष्ट्रीय चेतना के स्वर शहीदों, क्रान्तिकारियों के प्रति आदर और आभार का भाव अपने आप में स्पष्ट कर देता है कि जिन लोगों ने देश के लिये बलिदान दिया है उनको यह देश कभी भूल नहीं सकता। गौर से देखिये तो शब्द–शब्द में हमारे क्रान्तिकारियों के प्रति उनकी अविस्मरणीय सेवा और निष्ठा को सम्मान दिया गया है। देश के प्रति उनके बलिदान को रेखांकित किया गया है और उनके बलिदान का जो ऋण है उससे कभी मुक्त भी नहीं हुआ जा सकता।

भइलै शहीद भारत माता के ललनवॉ
बरदनवॉ दइके अमर ललना।।
मंगल पांडे, का बिगुल बजा, ॲगरेजों पर सब जन कोये
लक्ष्मीबाई, कुॅवर सिंह, नाना साहेब तात्याटोपे
पउलैं वीरगती केउरन के मैदनवॉ।। बरदनवॉ।।
खुदीराम राजेन्द्र लाहिड़ी बिसमिल दास बिहारी
राजगुरू सुखदेव भगत सिंह सभी देश हितकारी
हॅसि हॅसि झूलि गइलैं फांसी पर झुलनवॉ।। बरदनवॉ।।

परमानन्द यतीन्द्र उधम सिंह असफाक उल्ला बटुकेश्वर
सावरवर जी गणेश शंकर वीर शिरोमणि चन्द्रशेखर
सिरसे कफन बांधि भये गोली के निसनवां का बरदनवा
राममोहन, नरेश गंगाधर बिपिन चन्द और रोशन लाल
लाला लाजपत कृष्ण गोखले नेता सुभाष जीम दन गोपाल
कहि कहि बन्देमातरम होइ गयेन सपनवा।। बरदनवा

साम्प्रदायिक सद्भाव को केन्द्रित करते हुये सामाजिक समरसता और धार्मिक स्वतंत्रता को पूरे मनोयोग से आदर के साथ याद किया जा रहा है इस कजली में–

किया करो गुरूनानक जी का ध्यान रे सॅवलिया
जो देते हैं ब्रह्मज्ञान का दान रे सावंलिया।।
याद करो तू कहाँ से आया किधर चला जाता रे
कौन तेरा है पिता सहोदर, कौन तेरी है माता रे।

भारतीय स्वाभिमान को जगाने के साथ–साथ विदेशी वस्तुओं के प्रति मोह और आसक्ति को त्यागने की बात साथ ही गोरों द्वारा भारत को संगठित तरीके से लूटने के उपक्रम को लक्षित करती यह कजरी।

विदेशी वस्त्र छोड़के भाई करो सुदेसी का प्रचार
जबले विदेसी देस में आयल है भारत खरवार।
हिन्द मुलक ऐसा है आला
ऊपजे सब वस्तु चौकाला।

उपर्युक्त उदाहरणों से यह बिल्कुल स्पष्ट हैं कि लोक विधा कजली लोक अभिव्यक्ति का सरस, सरल, मजबूत एवं बहुरंगी माध्यम है जिसमें समस्त प्रकार के सांसारिक विषयों के साथ–साथ लोक परलोक की अवधारणा को भी बहुत ही तरीके से उल्लिखित किया गया है जो इस बात का सूचक है कि कजली का आकाश बहुत विस्तृत है और इन्द्रधनुष के सात रंगों से परे भी कजली का रंग है।

ykd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

HkkjrsUnq dk dtyh&izse

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लोकगीतों की रचना में वार्षी कन्या कजली को सबसे अधिक महत्व दिया है। वे इसे लोकचित्त की कोमल कान्त सवेदना मानते रहे। लोकदर्शन के लिए कजली उनकी तीसरी आंख थी। जितनी भी कजलियां उन्होंने लिखी हैं, उनमें उनकी प्राणधारा नादमयी मेधिकाओं की भांति प्रवाहित हुई है। उनकी कजलियां वार्षी लोकगीतों के अतीत से कभी नहीं कटीं। वे कजली की पारम्परिक धुनों से निनांदित होती है। भारतेन्दु की कजलियों में प्रकृति अपने उद्दाम सौन्दर्य के साथ रूपायित होती है। भारतेन्दु अपनी कजलियों को विप्रलंभ जनित पीड़ा के आसंगम से मुक्त कर देते हैं। वे तो 'प्यारे कृष्ण के सखा' और 'राधा रानी' के 'गुलाम' थे, इसलिए 'पिय बिछुड़न को दुसह दुख' का प्रत्यक्षीकरण उन्होंने नहीं किया। उनका मन मंजिष्ठा राग के संस्पर्श से सदैव रससिक्त रहा करता था। ऐसी ही भाव दशा में वे लिखते हैं–

^^ekfg uan ds dq/kkbZ cqyekbZ js gjhAA
cgq iqjokbZ vkSj cnfj;k >qfd vkbZ jkek]
dqt eas cqykbZ cqtjkbZ js gjhAA
cfl;k ctkbZ lqfu lf[k mfB vkbZ jkek]
lc tqfj vkbZ jl cjlkbZ js gjhAA
ek/koh Hkh tkbZ ft; vfr gqylkbZ jkek] dtjh
lqukbZ eu HkkbZ js gjhAA
fey mj ykbZ l;kjh fi; dks yqHkkbZ jkek]
*ukgha gjhpUn iNrkbZ js gjhAA**

भारतेन्दु जी मन के वशीकरण के लिए मनभावन कजलियों से रस की वर्षा करना चाह रहे थे। परतन्त्रता के पाश में जकड़े टूटे, अवसादग्रस्त लोक समुदाय को केवल नवजागरण की नवोदित चेतना ही आवश्यक नहीं थी, उल्लास और उत्साह का परिवेश भी जरूरी था।

भारतेन्दु ने कजरी को रस सृजन के दायित्व का काम सौंपा। कजरी की पुस्तकें लिखीं और उनका नामकरण किया 'रस बरसात', 'वर्षा विनोद' और 'कजरी जयन्ती'। यह नामकरण अकारण नहीं था। देखा जा सकता है कि इन नामों में 'रस' और 'वर्षा' दोनों विद्यमान हैं। दोनों में वर्ण मैत्री है। एक मनुष्य का मन है, दूसरा प्रकृति का सौन्दर्य है। पुरवाई का बहना, बादलों का झुकना और वंशी का बजना मिलनोत्कंठा को तीव्रतर कर देते हैं। भारतेन्दु ने ऐसे ही भावविह्वल क्षणों को अपनी कजलियों में अवतरित किया है। उनके युग में 'मलार जयन्ती' अथवा 'कजरी जयन्ती' जैसे नाम युग की उदग्रता के द्योतक है। धरती के लिए अंकुरण और पल्लवन का सन्देश लेकर आनेवाली वर्षा ऋतु का जयन्ती समारोह रचने और उसमें कजरी गायन करने की परिकल्पना केवल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ही कर सकते थे। पुनर्जागण का आह्वान केवल राजनीतिक क्षेत्रों में ही वांछित नहीं था। सूर्योदय का अर्थ ही होता है, प्रकाश की किरणों का दिग्दिगन्तर में विस्तीर्ण हो जाना। भारतेन्दु ने अपने दिग् व्यापी रचना–धर्म का प्रतिस्थापन कंजलियों में भी किया। उनकी कजलियां भी प्रकाश की नव चेतना की संवाहिका हैं– परोक्ष रूप से अधिक, प्रत्यक्ष रूप से कम। इसीलिए कजली संकलनों के काम में उन्होंने इतनी सजगता दिखलाई।

भारतेन्दु ने दंगली और अखाड़े की एक भी कजली नहीं लिखी। उनकी सभी कजलियां लोकांचल की नारियों के कंठ से निसृत धुनों में हैं। धुनों में वे परम्परावादीहैं, परन्तु कथ्य में मध्ययुगीन तथा आधुनिक दोनों हैं। उनके समय में कजलियों के अखाड़े स्थापित हो गये थे जिनकें बीच लावनीकी तरह प्रतिस्पर्धात्मक दंगलों के आयोजन होतैं लावनी में भारतेन्दु की दृष्टि कजलियों से भिन्न थी। उन्होंने दंगली लावनियां भी लिखीं, परनतु उनका भी नामकरण किया 'फूलों का गुच्छा'। यह नाम जहाँ जयात्मक उत्कलिका का प्रतीक था, वहीं सांकेतिक भी था। इस नाम में कई सन्दर्भ उभरे थे। लावनी के मार्द्रव के अतिरिक्त इससे जाति, धर्म, सम्प्रदाय तथा राष्ट्रीय एकता का भी भाव ध्वनित हुआ था, सामूहिक गायन और प्रतिस्पर्धा का भी बोध हुआ था, परन्तु अपनी कजलियों में उन्होंने प्रेम तथा सौन्दर्य के उत्तेजक क्षणों एवं एकान्तिक अनुभूति की व्यंजना की थी। मधुरा भक्ति के सन्दर्भ में लिखी

गयीं उनकी कजलियां इसी कोटि में आती हैं। यहाँ इस सन्दर्भ की एक कजरी देना यचिकर होगा—

^^,jh l[kh >qyr fgaMksjs ';kek ';ke fcykd os dne dsrjA
,jh lkHkk nsf[kr gh cfu vkoS fcjN lksgS gjs gjsAA
,jh rgka jedr l;kjh >qys fn, ckg fi; ds xjsA
,jh Nfo nsf[kr gh gfjpUn uSu ejs vkor HkjsAA**

प्रेम भक्ति में विह्वल उपासक की मनोदशा का सघन चित्रण करने में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कजलियां सौन्दर्य के उस केन्द्र से जुड़ जाती हैं, जहाँ भक्त का मन परिधि की तरह रेखांकित रहता है। ऐसी कजलियां आकार में छोटी, परन्तु संवेदित मन की व्यंजना में विराट हैं। ऐसी कजलियों को लिखते समय उनके मन में एक नारी बैठी होती है जो अपने को विवृत करने के लिए आकुल रहती है। उन्होंने अपनी कजलियों को प्रायः झूला से सम्बद्ध रखां 'झूला' उनकी कजली का पूरक था, 'कुंज' अनुपूरक। ये तीनों समरेख थे। हर बिन्दु पर प्रेमी प्रेमिका राधा कृष्ण की उपस्थिति थी।

भारतेन्दु ने कजलियों के उत्सव में नारियों का आह्वान किया जबकि लावनी के समारोहों में पुरूषों का। इस प्रकार वे नारी जागरण के प्रथम चरण को विकसित करने में लगे थे। कंजली लेखन के प्रथम चरण में उन्होंने राष्ट्रीय जागरण, इतिहास, पुराण अथवा धर्म और राजनीति से सन्दर्भित कजलियां नहीं लिखीं। वे कजलियों के मार्ग पर सोपान प्रति सोपान आगे बढ़े थे। पहली आवश्यकता थी नारी मुक्ति की सुसुप्त लालसा जगाना। इसके लिए उन्होंने सहज सरल लोकभाषा में कजलियां लिखीं और उन्हें शहरी तथा ग्रामीण अंचलों में दूर दूर तक प्रसारित करने की व्यवस्था की। वे चाहते थे कि पहले अपढ़ नारियां यह तो जानें कि कहीं हरिश्चन्द्र है जो राष्ट्रीय स्वातंत्र्य के लिए साहित्य संघर्ष कर रहा है। इसके लिए नारी को नारी की तरह समझना जरूरी था। दादरा, खेमटा, नकटा, झूमर, गारी, होली, चेती, बारहमासा जैसी विधाओं की रचना भी वे इसी उद्देश्य के लिए कर रहे थे। गीत की इन सारी लोक विधाओं में नारी अनुगम्य थी, पुरूष अनुग था।

भारतेन्दु को कजरी लेखन की प्रेरणा 'प्रेमधन' से प्राप्त हुई जिसके बाद उनके मण्डल के सभी रचनाकारों तथा मण्डलेतर सौ से अधिक छोटे बड़े कवियो ने कजलियां लिखीं। कजली लेखन के एक नये युग का उदय हुआ, परन्तु कजली लेखन के सामाजिक दर्शन में भारतेन्दु ही शीर्ष पर रहे। हालांकि संख्याम ें इनकी कजलियां प्रेमधन, अम्बिकादत्त व्यास, वामनाचार्य गिरि, मनोहर दास रस्तोगी, शिवदास मालवीय तथा किशोरी लाल गोस्वामी से काफी कम हैं, लेकिन फिर भी वे सबसे महान कजलीकार हुए। इसका कारण यह रहा कि उन्होंने अज्ञात समय से चली जाने वाली परम्परागत कजलियों में नया प्रयोग नहीं के बराबर किया। इनकी सपाट कजलियां लोकनारियों में खूब प्रचलित हुई। कजली में नारी मनोभाव की अभिव्यक्ति की धारणा उन्होंने प्रेमधन के 'नाचघर' में बनाई। सन् 1874 के प्रारम्भ में प्रेमधन जौन से लौटते हुए वाराणसी गये। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से उनकी पहली मुलाकात हुई। भारतेन्दु जी ने उनको 'बुढ़वा मंगल' के आयोजन में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया। इस आयोजन की मौज मस्ती, उल्लास की उन्मुक्त अभिव्यक्ति तथा समारोह की लोकमयी भव्यता को देखकर वे चमत्कृत हो गये। प्रेमधन बुढ़वा मंगल से मिलता जुलता उत्सव भाद्रपद कृष्ण तृतीया अथ्रत् कजली पर्व पर किया करते थे। उनके 'नाचघर' में व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक कजली गायिकाएं भाव प्रदर्शन के साथ कजलियां गाती थीं। बरसात का रस पूरे वातावरण में निस्सीम हो उठता था। प्रेमधन के आग्रह पर भारतेन्दु जी इस वर्ष उक्त आयोजन में सम्मिलित हुए। गायिकाओं को पुरस्कार दिया। प्रायः हर वर्ष वे कजली तीज के महोत्सव में आने लगे। भारतेन्दु की प्रेरणा से प्रेमधन द्वारा आयोजित कजली समारोह में अम्बिकादत्त व्यास, बालकृष्ण भट्ट, किशोरी लाल गोस्वामी, खंग बहादुर मल्ल आदि भी सम्मिलित होने लगे। इस कजली उत्सव में आने के बाद मदन मोहन मालवीय तक कजलियां लिखने लगे। अधिकांश रचनाकारों ने स्वरचित कजलियों में नवजागरण का स्वर उभारा, परन्तु दंगली कजलियां किसी ने नहीं लिखीं। इन धटनाओं का उल्लेख प्रेमधन के भतीजे तथा इलाहाबाद हाईकोर्ट के ख्याति लब्ध वकील नर्मदेश्वर उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'प्रेमधन परिवार' में विस्तार के साथ किया है।

भारतेन्दु युग में कजली लेखन का जो परिवेश सृजित हुआ, उसकी अभिव्यक्ति 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका', 'हिन्दी प्रदीप', पीयूष प्रवाह' जैसी तद्युगीन पत्रिकाओं में होने लगी। सम्पादक तथा कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से कजलियों की मांग करने लगे। भारतेन्दु लोक और शास्त्र दोनों को महत्वपूर्ण मानते थे। उनके लिये युग परिवर्तन की दिशा बहुमुखी थी। उनके सम्पूर्ण लेखन से ज्ञात होता है कि शास्त्र और लोक के पारस्परिक संबंधों में वे दरार नहीं उत्पन्न करना चाहते थे, परन्तु शास्त्र को वे लोकोपयोगी बनाना चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि शास्त्र का आतंक लोक को हीनवृत्ति बना दे। रचना और गीत के क्षेत्र में भी वे लोक और शास्त्र का सामंजस्य बनाये रखना चाहते थे। इसी दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने कजली और मलार दोनों को साथ–साथ प्रकाशित किया। इन पन्द्रह कजलियों में अधिकांश सोन्दर्यानुराग की भाव भूमि पर हैं परन्तु एक कजलियों में कुछ विप्रलंभ प्रधान भी हैं। ये कजलियां 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' खण्ड 7 सं0 2, बैशाख शुक्ल 1 सम्वत् 1937 पृ0 29' पर प्रकाशित हुई हैं प्रश्न उठता है कि वासन्ती ऋतु में वे कजली क्यों लिख रहे थे? उत्तर कठिन नहीं है। वे वर्षा ऋतु की तैयारी तो कर रही रहे थे, साथ ही 'कजली' को युग परिवर्तन का साधन भी बनाना चाह रहे थे। युग निर्माण के लिए ऋतुओं का बन्धन उन्हें स्वीकार्य नहीं था। इन कजलियों में से दो एक कजलियों का रसास्वादन करना अनपेक्षित न होगा। प्रियतम के रूप के प्रति तन्मय आसक्ति का चित्रण करती हुई एक कजली इस प्रकार है–

^rkjs ij Hk;s erokj js u;uokA
ykd ykt tl vtl u ekus lj l :i fj>okj js u;uokAA
efnjk ije fi;s erokjs lcls djr fcxkj js u;uokA
*gjhpUn fi; :i nhoku s djr u rfud fopkj js u;uokAA**

पन्द्रह कजलियों की शुरूआत उन्होंने लोक चिन्ता के ही साथ की–

^n[kks Hkkjr Åij dSlh Nkbl dtjhA
feVh /kj e l iaih lc vkbl dtjhAA

n;t on dh fjpu NkfM+ xkbZ dtjhAA
*u;i xu ykt NkM+h eq g ykbZ dtjhAA***

साफ देखा जा सकता है क यह कजली महज एक वर्षा ऋतु का लोकगीत नहीं है बल्कि युग परिवर्तन का महा आलेख है। इस कजली द्वारा कजली की तद्युगीन भूमिका को भलीभांति समझा जा सकता है। कजली सम्पूर्ण समाज को एक रेशमी सूत्र में बांध रही थीं। 'द्विज' से लेकर 'नृप' तक का पुनर्संस्कार हो रहा था और मंत्रोचचार के आसन पर कजली बैठी हुई थी। ''देखो भारत ऊपर कैसी छाई कजली'' की व्यंजना को समझने के लिए मंत्र उद्बोधक की भूमिका कजली को देना लाजमी था। भारतेन्दु ने अपनी कजलियों के माध्यम सें अभिजात्य चिन्तन के दम्भ को छिन्न–भिन्न कर दिया था। हालांकि भारतेन्दु युग में प्रेमधन 'कजली' में महाकवि रहे, परन्तु वे संप्रेक्षण को उस स्तर तक धारदार नहीं बना सके जिस स्तर तक भारतेन्दु ने बनाया था।

ऐसा नहीं कहा जा सकता कि भारतेन्दु की नव जागरण दृष्टि उनकी कजलियों में अनभिव्यक्त रह गई हो। हालांकि उन्होंने श्रृंगार रस प्रधान कजलियां अधिक लिखीं, परन्तु यह भी उन्होंने एक सार्थक उद्देश्य के अनतर्गत किया। अपनी कजली रचना के प्रथ सोपान पर वे चिन्तावसन्न सामाजिक बोध को स्पन्दित करना चाहते थे।

दूसरे सोपान पर लिखी कजलियों द्वारा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ज़ाहिरा तौर पर नव जागरण का अभियान चलाया था। सबसे पहले उन्होंने इतिहास के उस अध्याय का उद्घाटन किया जिसमें देश को गुलाम बनाने वाली घटना का उल्लेख है, जिसमें फूट, स्वार्थ, छल और राष्ट्र के साथ की गयी गद्दारी की काली कहानी लिखी है। मध्यकालीन इतिहास उनके समक्ष मूर्ति हो उठा। उन्होंने लिखा–

^^dkgs rs pkdk yxk; t;pannokA
*viuks LokjFk Hkwfy yqHkk, dkgs pkVh dVok cqyk, t;pannokAA***

परतन्त्रता की इस दुर्भाग्यपूर्ण घड़ी को समझे बिना नये विचारोदय की कल्पना नहीं की जा सकती थी। इस कजली में 'जयचंदवा' को टेक पद में लिया गया और इसी को

रचना का रदीफ बना दिया गया। लगातार पुनरावृतित द्वारा 'जयचन्द' की घृण्य वृत्ति का उत्खनन किया गया। इसके पीछे निहित उद्देश्य यह था कि भारतेन्दु–युग में जयचन्दों की बढ़ती संख्या खतरनाक स्थिति तक पहुँच गई थी। इस स्थिति पर अंकुश लगाए बिना पुनर्जागरण का स्वस्त्ययननहीं पढ़ा जा सकता था। उन्होंने इतिहास के उस तथ्य को उजागर किया कि देश के साथ गद्दारी करने वाले को भी अपनी दुष्करणीका दुष्फल भोगना ही पड़ता है। पुनर्जागण की यह अत्यन्त यथार्थवादी योजना थी। इसके बाद की कजली में उन्होंने जातीय संघर्षहीनता को चुनोती दी। इसके लिए भी इतिहास की घटना उठाई। घटना सोमनाथ मंदिर टूटने की है। उन्होंने मन्दिर पतन का कारण हिन्दुओं में पुरूषार्थ कआ अभाव बतलाया। यहाँ उन्होंने हिन्दू साम्प्रदायिकता का उल्लेख नहीं किया था, बल्कि हिन्दुत्व की उस विचारधारा का एहसास कराया था जिसके तहत हिन्दू अन्यायपूर्ण किए गए हर आक्रमण का विरोध करता है। कजली का प्रारमभ किया था– ''टूटै सोमनाथ कै मंदिर केहू लागै न गोहार'' और कजली का अन्त किया था– ''अब जग हिन्दू केहू नाहीं एूठै नामै कै बेवहार।'' देखा जा सकता है कि उनकी हिन्दू विचारधारा केवल भारतवर्ष तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका विस्तार पूरे 'संसार' में है। इस कजली के लिखने का उद्देश्य यह था कि वे न्याय के लिए संघर्ष हेतु एक जुझारू और पुरूषार्थी पीढ़ी रचना चाहते थे। इसके लिए वे अत्यन्त संवेदनशील हो उठे थे।

ऐसा नहीं कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को भारत के मध्यकालीन इतिहास की सामूहिकता पर अविश्वास था। उन्होंने इतिहास के बहुलांश पर आस्था जताई, उसके गौरव के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की और इतिहास के उन उज्जवल तत्वों को दोहराते हुए कजलियां लिखीं। ऋतु लोकगीत में इतिहास का पुनर्पाठ करना एक नवीन घटना थी। दंगली कजलियो में पुराण कथाओं को दोहराने की प्रथा तो चल पड़ी थी, परन्तु इतिहास अछूता था। भारतेन्दु ने झूला एूलती हुई स्त्रियों में गायी जाने वाली कजलियों को इतिहास का विषय बनाया। ये कजलियां नारी शिक्षा की प्रथम पाठशाला सिद्ध हुई। किशोरियों से लेकर वृद्धाओं तक ने इस पाठशाला में दाखिला लियां इतिहास के काले और सफेद दोनों अध्याय खुले। काले अध्याय का

जायजा लिया जा चुका हे, अब श्वेत पक्ष की बारी है। एक लम्बी अवधि के इतिहास का पुनर्वाचन करते हुए उन्होंने कजली लिखी–

^^/ku /ku Hkkjr d lc N=h ftudh lt l /kt k Qgjk;
ekfj ekfj d 'k=q fn, gq yk[ku cj Hkxk;A
egkuUn dh Qk t lur gh Mj fldUnj jk;AA
jktk pUn xlr y vk, cVh flY;dl dh tk;A
ekfj cyfpu foØe jg 'kdkjh inoh ik;AA
ckik dkfle ru; egEen thR;k flU/k fn;k mrjk;A

देखा जा सकता है कि इस कजली में ई0पू0 चौथी शताब्दी से लेकर आगे तक भारत के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास में घटित गौरवपूर्ण गाथा को राष्ट्रीय गर्व के साथ अनुस्यूत कर दिया गया है। यह उनके इतिहास बोध का जीवन्त उदाहरण है।

भारतेन्दु केवल प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास के प्रति सजग रहे हों, ऐसी बात नहीं। जो काल आगे आने वाली पीढ़ी के लिए इतिहास बनने वाला था, उसका अवलोकन उन्होंने बड़ी गहराई के साथ किया। आम जनता का यही यथार्थ था। वर्तमान के प्रति ही अनुरक्ति और मुक्ति का द्वन्द्व चलता है। भारतेन्दु इस द्वन्द्व के सूत्रधार थे। अपने नाटकों में संस्कृत लेखन के तमाम पुराने नियमों का प्रयोग उन्होंने नहीं किया, परन्तु प्रस्तावना और सूत्रधार को बनाए रखा। उन्हें अपने साहितय में नये युग की प्रस्तावना करनी थी और सूत्र उन्हें ही संभालना था। वे भला प्रस्तावना और सूत्रधार का परित्याग कैसे करते। वे ऐसा कोई परिवर्तन नहीं चाहते थे जो अतीत को आच्छादित कर लें। यह काम उन्होंने अपनी कजलियों में भी किया। उन्हेांने संस्कृत का गहन अध्ययन किया। संस्कृत की बंधी बंधाई परिपाअी को तोड़कर उन्होंने भाषाई सरलीकरण किया और वर्ण वृत्त की परिधि को लोक गीतों तक विस्तृत किया। इसीलिए उन्होंने संस्कृत में फारसी छन्द की लावनियां लिखीं और लोकछनद कजलियां लिखीं। वर्ण चिन्तन को लोकचन्तिन से मिला दियां संस्कृत की कजलियों में उनकी सौन्दर्य चेतना और अधिक सघन हो गई। संस्कृत की कजलियों में उनकी तदीयता का

सौन्दर्य प्रगाढ़तर हो गया। संस्कृत की कजली लिखते समय उनकी दृष्टि में 'गीत गोविन्दम्' के रचनाकार जयदेव रहे। भारतेन्दु की कजली रचना की मनोभूमि को समझने के लिए उनकी एक संस्कृत कजली देना संगत होगा–

^^gfj gfj /khj lehj fogfjr jk/kk dkfyUnh rhjA
dtfy dy dyjo dkdkofy dkjMo dhjAA
o"kfr piyk pk: peRdr l?ku l?ku uhjA
*xk;fr futin inejk.kjr dfooj gfj'pUn /khjAA**

'गुलाम राधा नारी के' कवि भारतेन्दु ने अपनी संस्कृत की प्रथम कजली इन्हीं को समर्पित की। कजलियों के साथ गाये जाने वाला वर्षा ऋतु का एक प्रिय छन्द है बारहमासा। संस्कृत के षड् ऋतु वर्णन तथा लोक में बारहमासा गायन दोनों एक ही सृजन चेतना के उद्भाव हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कजलियों के साथ साथ बारहमासा गीतों की भी रचना की। ग्यारहवीं शताब्दी के अब्दुल रहमान, हेमचन्द सूरि और विनयचन्द सरि ने अपभ्रंश साहित्य में बारहमासा लेखन की जो परम्परा प्रारम्भ की थी, वहभक्तिकाल आते–आते विरल पड़ने लगी। केवल प्रेमाश्रयी शाखा के कवियों ने ही बारहमासा के शिल्प और संवेदना की रक्षा करते हुये इसे लोकतत्व से सम्बद्ध रखा। रीतिकाल में बारहमासा लिखने की परम्परा ध्वस्त हो गयी परन्तु यह थे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जिन्होंने बारहमासा की भक्ति परम्परा को पुनर्जीवित कर दिया। उन्होंने बारहमासा को ऐसी सुरम्य रचना के रूप में उभारा जिसमें लोकतत्व और साहित्य तत्व एक दूसरे में घुलमिल गये। भारतेन्दु के प्रयासों के कारण बारहमासा लेखन उनके युग की रचना विधा का एक उल्लेखनीय शिल्प बन गया। उस युग की सभी पत्रिकाएं बारहमासा की रचनाओं से भरी पड़ी हैं। उन्होंने स्वयं अपनी पत्रिका 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में बारहमासा प्रकाशित करने का क्रम प्रारम्भ कर दिया। एक उदाहरण–

^^vk"kk<+ ek ?ku xjft vk;s nkfeuh uHk nefdghA
lud iou lulu gfjr ouHkfe lqUnj ygyghAA
rgk ijr eUn Qqgkj uo lqdekj fi; xy ckg nhA

ru iqyfd Hkhtr fQjr xkor fefy eykj uVh iyAA

^^ckjgekl k**

^^ekl vlk<+ mefM+ vk, cnjk _rq cjlk vkbZA

ckyeq ekj lkj pgq fnl ?ku?kksj ?kVk NkbZAA

iihgu ih ih jV ykbZA

Hkk;ks vkjEHk fo;ksx fQjh tc dke dh ngkbZAA

nf[k eksjh rfc;r ?kcjkrhA

*dlls jlu dVs fcu fi; ds uhan ugha vkrhAA***

'बारहमासी' में वे रीतिकाल के समीप हैं और 'बारहमासा' में आधुनिक काल के। पहले में भाषा और छन्द दोनों असंक्रमित हैं जबकि दूसरे में संक्रमणशील। इतना तो निश्चित है कि भारतेन्दु ने अपनी बारहमासा विधा में वियोग श्रृंगार का ही चित्रण किया है। बारहमासा की यी परिपाटी अप्रभ्रंश काल से चली आ रही थी परन्तु अप्रभ्रंशकालीन कवियों ने अपने बारहमासों का प्रारम्भ सावन महीने से किया था। लगता है कि उन कवियों ने महीनों की गणना ऋतु विभाजन के आधार पर की थी। भारतेन्दु ने अपने 'बारहमासे' जायसी के अनुसार आषाढ़ महीने से शुरू किए। लोक में वर्षा, जाड़ा और गर्मी तीन ही ऋतुओं की अवधारणा थी। भारतेन्दु इसी लोक अवधारणा के अनुगामी थे। इसलिए उनके बारहमासे आषाढ़ महीने से आरम्भ होते हैं।

भारतेन्दु ने अपने बारहमासों में प्रायः टेक पद का विधान किया है परन्तु उनकी किसी भी बारहमासी में टेक पद नहीं है। बारहमासों के अतिरिक्त उन्होंने कुछ 'चौमासा' भी लिखे। इसकी संवेदना भी विरहानुभूति है। प्रकृति का चित्रण उद्दीपन रूप में किया गया है। इन चौमासों में आषाढ़ से क्वांर तक का चित्रण हुआ है। भारतेन्दु युग में ही ये बारहमासे कजली और लावनी के दंगलों में गाये जाने लगे थे। इसी कारण इनका प्रचार दूर–दूर तक गांवों में होने लगा था।

बारहमासा की तरह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'मलार' गीत भी खूब लिखे। इनके अधिकांश

मलार गीत झूला और दोला क्रीड़ा से सम्बद्ध हैं। इन मलार गीतों में प्रेम, श्रृंगार, सौन्दर्य भक्ति और प्रकृति की मनोहर शोभा का वर्णन विविध रूपों में किया गया है। भारतेन्दु कंजली, बारहमासा और मलार के संगम को पावन लोक रचना विधा मानते थे। उन्होंने 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में प्रकाशित इन तीनों विधाओं की रचनाओं का संग्रहण और संकलन कर 'मलार जयन्ती कजली संग्रह' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया। इसके अतिरिक्त 'वर्षा विनोद' और 'रस बरसात' में भी इन तीनों विधाओं की रचनाएं उपलब्ध हैं।

बारहमासा गीतों की तरह 'मलार' गीतों की परम्परा विच्छिन्न नहीं हुई। इतना अवश्य हुआ कि इनका संगीत के क्षेत्र में शास्त्रीयकरण हो गया। भारतेन्दु युग तक मलार एक शास्त्रीय राग हो गया। भारतेन्दु ने अपनी मलार रचनाओं को उक्त दोनों दृष्टियों से देखा। उनके कुद मलारों की सरस परम्परा लोकगीतों की तरह ही बनी रही। इनमें वर्षा ऋतु की रागमयी अभिव्यंजना भी हुई और राग तथा ताल से भिन्न लोकगीतों की लयात्मक अन्विति भी बनी रही। सभी जानते हैं कि मिथिलांचल की नारियां झूले पर बैठकर वर्षा ऋतु में मलार का गायन कजली की तरह आज भी करती है। भारतेन्दु ने इस शैली के भी मलार गीत लिखें। उन्होंने ब्रज की स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले मलारी गीतों की भी धुन ग्रहण की और इस धुन के मलार लिखें। इन सबके साथ ही शास्त्रीय संगीत में स्वीकृत मलार राग की भी रचना की। जो मलार शास्त्रीय संगीत में लिखे गये, उनमें राग और ताल का भी उल्लेख कर दिया गया। इस प्रकार मलार को भी कजली की भाँति व्यापक और सामूहिक स्वीकृति मिली।

भारतेन्दु के रचनाकार व्यक्तित्व की एक बड़ी खूबी यह भी कि जिन रचना विधाओं को उन्होंने अपने युग के लिए उपादेय समझा, उन्हें स्वयं तो अपनाया ही, साथ ही अपने मण्डल के अन्य रचनाकारों को भी उन विधाओं में रचना करने की प्रेरणा दी। उन्होंने अपने युग के सभी रचनाकारों से मलार लिखवाए। हर प्रकार की रचना विधा में मलार का सन्निवेश किया, नाटक, काव्य ग्रन्थ, लोकरचना विधा और पत्र पत्रिकाओं मे मलार गीतों को स्थान दिया। शास्त्रीयता के पाश में जकड़ते मलार को उन्मुक्त कर दिया। मलार लिखा–

^^fi;k cu lu h lf t;k lkfiu lhA

ekjk ft;jk Mfl&Mfl yxr

jru Mjkjh dkjh Hkkjh 0;kdqy fi; fcu pqrA

rM+ir djoV yxr vdqyh /khj tdkÅ ufgu nqrA

*fi; gfjpUn fcuk dks xjoks yfx dS gk; fuokgS gqrAA**

इस मलार गीत में लोकगीतों की लय पूरी तरह सुरक्षित है। यह कजली से जरा भी भिन्न नहीं है। यदि इस गीत को मलार का शीर्षक देकर न लिखा गया होता तो उसकी गणना 'सावनी' गीतों में ही की जाती। यह अज्ञात नहीं है कि जिन क्षेत्रों में वर्षा लोकगीत 'कजली' नाम से नहीं गाए जाते वहाँ वे 'सावनी' नाम से लोककंठ की निधि बने हुए हैं। भारतेन्दु ने अनेक सावनी गीत भी लिखे। उनके सावनी गीत स्त्रियों द्वारा झूले पर गाये जाने वाले मलार गीत के ही समान हैं। उदाहरण के लिए उनकी लोकगीत रचना 'वर्षा विनोद' में संकलित एक 'सावनी' को लिया जा सकता है–

^^fi; fcuq l[kh uhan u vkos lkfiu lh Hkbz jru

0;kdqy rM+iS vdqyh ihre fcu ufga pSuA

dSls eSa thÅa fcuq l;kjs gk cjlr Vi&Vi uSuA

*gjhpUn djr u lkou ekjr ekgu esuAA**

लेकिन सांगीतिक मलार लिखते समय वे राग और ताल का नाम देना नहीं भूलते। 'ख्याल मलार ताल झपक', 'ध्रुव पद टोडी वा गौड़ मलार चौताला', 'सूरदासी मलार, आड़ाना तिताला', 'मलार खेमटा', 'मलार परज', 'मलार की ठुमरी', 'राग मलार चौताला' जेसे दो दर्जन रागों और तालों का निर्देश मलार रचना के प्रारम्भ में कर दिया गया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कजली, मलार, सावनी और बारहमासा की रचनाएं ही नहीं की बल्कि कजली की उत्पत्ति, उसके विकास और नामकरण पर भी प्रकाश डाला। कजली लोक विधा को लेकर अनेक लोगों ने इतिहास लेखन किया। कजली गीतों के वर्गीकरण, लय निर्धारण और भाषा संगठन पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। यह भारतेन्दु की प्रेरणा थी। यदि गांवों और लोकांचलों में कजली गयी तो साथ उसका इतिहास भी गया। अपनी

ऐतिहासिक परम्परा से जुड़ी कजलियों के प्रति लोगों में आत्मीयता के भाव जागे।

भारतेन्दु ने कजली का सन्दर्भ उठते हुए दो बहुत महत्वपूर्ण तर्क दिए हैं। पहला है इतिहास अर्थात् कन्तित देश में किसी दादूराय राजा का राज्य। चूँकि उस राजा का विरोध मुसलमानों के साथ दिखाया गया है, अतः इतिहास का यह पन्ना मध्यकालीन ही हो सकता है। एक दूसरा तर्क है भूगोल अथ्रात् किसी कजरी वन की स्थिति जो विन्ध्याचल मन्दिर के आस पास कहीं रहा होगा। यह शोध का विषय है। भारतेन्दु जैसे प्रामाणिक रचनाकार से अर्थहीन स्थापनाओं की कल्पना नहीं की जा सकती। उनकी पौराणिक मान्यता तो उन सभी लोगों ने स्वीकार की जिन्होंने कजली का इतिहास लिखा। इस श्रृंखला में प्रेमधन ने 'कजली कुतूहल' में कजली का इतिहास तथा लेखन कला पर बड़े विस्तार के साथ प्रकाश डाला है। अम्बिकादत्त व्यास, किशोरी लाल गोस्वामी और मनोहर दास रस्तोगी के 'कजली इतिहास' की खोज महत्वपूर्ण है। भारतेन्दु द्वारा स्थापित इस मत के सभी समथ्रक हैं कि कजली पुराण परम्परा से निसृत हुई है, यह लोकगीत विधा कान्तित की देन है और इसका जन्म ग्यारहवीं या बारहवीं शताब्दी में हुआ था। भारतेन्दु ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी भाषा' में एक पुरानी कजली का उल्लेख भी किया है। सन्दर्भ देते हुए उन्होंने लिखा है''

^^fi; fcuq ih;j HkbY;s jstl vukj dh dyhA
fnYyh ds njctok gks ufFk;k ,syh fcdk; yks;A
tk; dgks ekjs ckjs lS;k ls ufd;k NNs ck;AA

निश्चित रूप से इस कजली की भाषा भोजपुरी है, परन्तु शब्द चयन और संरचना शिल्प को देखते हुए इसको 11वीं–12वीं शताब्दी की कजली नहीं कहा जा सकता।

तथ्य चाहे जो हो, परन्तु कजली के प्रति भारतेन्दु जी का लगाव इससे अवश्य सिद्ध होता है। भारतेन्दु जी की प्रेरणा से ही तद्युगीन नाटककारों ने अपनी कृतियों में कजली, सावनी, मलार और बारहमासा की संयोजना की और कजली को साहित्य के सिंहासन पर बैठा दिया। यह था भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का कजली प्रेम।

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkothdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

ykd fo/kk dtyh d ;xck/k ij lfo[;kr ykd dyk eeK ykdfon Jh vry ;nokh l lokn& lk{kkRdkj

श्री अतुल यदुवंशी राष्ट्रीय स्तर पर लोक कला और लोक कलाकारों के विकास, संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिये जाने जाते हैं। आप स्वयं बहुत ही प्रख्यात लोक कलाविद् हैं, लोक नाट्य निर्देशक हैं और लोक कला के हर तरह के फार्म और कन्टेन्ट को पूरे सम्मान के साथ सवंर्द्धित और प्रदर्शित करने में आगे रहते हैं, आप उत्तर प्रदेश संगीत नाटक एकेदेमी से सम्मानित हैं तथा भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय की विविभिन्न कमेटियों में बतौर सदस्य अपनी सेवायें देते रहे हैं। साथ ही आपने संस्कृति मंत्रालय की वरिष्ठ अध्येत्ता की है एवं अमूर्त लोक कला पर भी आपने शोध किया है। भारतीय लोक कला महासंघ के आप राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, लिहाजा लोक कला और लोक कलाकारों के जीवन के विकास और उनकी कला के संरक्षण और उत्तरोत्तर उन्नयन के लिये आपका नेतृत्व उल्लेखनीय है। लोकगीत कजली के प्रति भी आपकी गहरी अर्न्तदृष्टि है और कजली के कई राष्ट्रीय प्रस्तुतियों में आपकी उपस्थिति और सहयोग का संदर्भ रहता है।

लोक कलाओं के वृहत्तर संरक्षण–संवर्द्धन एवं लोक कलाकारों के मान–सम्मान, अधिकारों हेतु अखिल भारतीय स्तर पर आपने निर्णायक नेतृत्व प्रदान किया है। यहाँ पर तमाम–तमाम केन्द्र एवं राज्य सरकार के विभागों के साथ लोक कलाओं एवं लोक कलाकारों के पक्ष में प्रबल पैरोकारी के लिये भी जाने जाते हैं। विशेष बात यह भी है कि आपने लोक नाट्य नौटंकी जैसी जीवन्त एवं रसवन्त परम्परा जो विलुप्ति के कगार पर पहुँच गयी थी। उस विधा में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, कालीदास, मुंशी प्रेमचन्द्र एवं लोक कथाओं पर आधारित

नौटंकियों की राष्ट्रीय–अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सफल प्रस्तुति कर नौटंकी के प्रति नवजागरण और युगबोध का गौरवशाली भाव पैदा किया।

lk{kkRdkj

iz'u % dtyh dks ,d ykd fo/kk ds :i esa vki dSls ns[krs gSa

mRrj % कजली को लोक विधा कहा जाय या एक समूची संस्कृति कहा जाये। वस्तुतः जमीनी स्तर पर यह घर–घर में है और लोक में व्याप्त है। कजरी की उपस्थिति, स्वीकृति और इसका व्यापक प्रचार इसके शिल्प एवं रूप को देखकर समझा जा सकता है। भारतीय दर्शन और परम्परा का सजीव प्रतीक है कजली। सच पूँछिए तो क्या नहीं है कजली में। उत्सव, प्रेम, विरह, विक्षोह, राष्ट्रभक्ति, निर्गुण, सामाजिक चेतना, देखिए ना! कितना बड़ा फलक है कजली का, सच पूँछिए तो सब कुछ तो है कजली में। कजली अपने साथ–साथ इतिहास का दस्तावेजीकर करते हुए चलती है। और सचमुच यह व्यापक शोध का विषय है बल्कि मैं यूँ कहूँ कि निरन्तर वृहद–विस्तृत शोध का विषय है कि कजली किस तरह से अपने समय के राग को अपनी अर्न्तचेतना के माध्यम से अभिव्यक्ति कर रही थी।

iz'u % dtyh ds n'kZu i{k ij D;k dguk pkgsaxs vkSj D;k ykd ijEijk ds :i esa dtyh dk Hkfo"; dSlk gS

mRrj % कजली का भविष्य बहुत शानदार है। मैं इसमें किसी तरह का कोई खतरा नहीं देखता। मुख्यतः लोक कलाकारों, लोक गायकों ने कभी भी अपने आपको कजली से दूर नहीं किया और यह भी हकीकत है कि कजली भी कभी इन कलाकारों से दूर नहीं हुई क्योंकि इन कलाकारों में परम्परा और संस्कृति के बीज रोपित थे। आप देखिये ना, आज भी कजली उत्सव महोत्सव गाँव, जिला, ब्लाक, विकास खण्डों में बराबर हो रहे हैं। कजली को लेकर सशंकित होने का कोई कारण नहीं है। जनपद–जनपद गाँव–गाँव कजरी लोक गायकों के लिये अनिवार्य सी है, न कलाकार भूलता है, न सुनने वाला भूलता है। कहना चाहूँगा कि भले ही यह परम्परागत रूप से ऋतु गीत है परन्तु लोक संवाद में यह बारहमासी अभिव्यक्ति है।

yksd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

iz'u % **dtyh esa fo{kksg vkSj foLFkkiu dk nnZ gS rFkk xzke Lojkt dh Hkkfedk esa vFkksZiktZu dk ydj Hkh lanHkZ gS] D;k dguk pkgsaxs**

mRrj % कजरी ने सदैव समय के साथ मुठभेड़ किया है और अपने समय की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है। विस्थापन के गीत, नायक नायिका के संदर्भ जरूर इसके मूल में है परन्तु कजली ने अपने वक्त को और उसकी सख्ती को बखूबी अभिव्यक्त किया है। यह बात सही है कि विस्थापन से उपजी है और अगर हमारा ग्राम समाज आर्थिक रूप से सक्षम और आत्मनिर्भर होता तो विस्थापना के इस दर्द से नहीं गुजरना पड़ता परन्तु कहा गया है कि चुनौतियों से ही सफलता के सूरज निकलते हैं और यह बात कजली पर बिल्कुल फिट बैठती है क्योंकि इसी विस्थापना और विक्षोह की पीड़ा और टीस से उत्पन्न गायकी की यह महान परम्परा आज जगत विख्यात है।

iz'u % **,d yksd dyk yksd xhf;dh ds :i esa lkekftd lejlrk ds {ks= esa dtyh dk D;k ;ksxnku gS**

mRrj % कजली सदैव से कौमी एकता, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकीकरण की बात करती रही है। ऐसी कोई कजली नहीं जिसने राष्ट्रीय एकता की भावना को कभी कमजोर किया हो। ऐसी कोई कजली नहीं जिसने साम्प्रदायिक सद्भाव, सामाजिक समरसता के पवित्र भाव को थोड़ी भी चोट पहुँचाई हो। वास्तविकता यही है कि जिस दौर में ऐसे अवसर आये जब हमारी सामाजिक एकता और समरसता में किसी तरह की शंका के बीज पड़े, कोई खतरा सा महसूस हुआ तो पूरी मजबूती के साथ कजली अपनी सांस्कृतिक लोक चेतना के साथ सामुदायिक सार्थक जनभावना का संचार करते हुये हमारे समक्ष आयी। ऐसी न जाने कितनी कजलियाँ हैं जिनमें समाज को जोड़ने की बात कही गयी है, सामाजिक सद्भाव के प्रेम रूपी धागे को और मजबूत करने की बात कही गयी है, पर्व, तीज, त्यौहारों को सामाजिकता की मिठास बढ़ाने का उद्यम बताया गया है, सुख दुःख को साझा करने की संस्कृति विकसित की गयी है। लिहाजा हम कह सकते हैं कि कजली ने साम्प्रदायिक एकता,

सामाजिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकीकरण और सामाजिक चेतना, अर्न्तचेतना को सदैव जागृत किया है और समाज में एक सार्थक, सकारात्मक, सर्जनात्मक तत्व का भाव बोध पैदा किया है।

प्रश्न : कोई एक कजरी हो जाये?

उत्तर : जी बिल्कुल, लीजिये यह कजली जिसमें प्रेम और समर्पण का पूरा दर्शन बोध है और यह कहने की जरूरत नहीं कि प्रेम और समर्पण का अनकहा शास्त्र हम सबकी माँ होती है। यह कजली भी मैंने अपनी माता जी से सुनी थी जो मुझे आज भी याद है और कई प्रस्तुतियों में मैंने इसका इस्तेमाल भी किया है।

कजरी

चढले सावन हो महिनवा,
हरि मोरा जोगिया भइलो ना.....
हरि बिन सूनीमहल अटरिया,
सब जग सूना भइले ना
सखियाँ कैसे कहूँ दिलबतिया,
हरि मोरा जोगिया भइले ना.....

दिनवा गिनत मोरी घिसली उगिरिया
रतिया बीते लेत करवटिया
सखियाँ कैसे कहूँ दिल बतिया,
हरि मोरा जोगिया भइले ना......

रहिया तकत मोरी बीतली उमिरिया,
नैनन जोति गई मोरी सखिया
सखियाँ कैसे कहूँ दिल बतिया,
हरि मोरा जोगिया भइले ना.....

चुनि–चुनि खायो कागा दही क देहिया

कागा छोड़ दीहो दुइनो अँखिया

हरि दर्सन की प्यासी ना.....

iz'u % dtyh esa izse dk lUnHkZ cgqr gS] dqN dguk pkgsaxs\

mRrj % श्लेष भाई आप बिल्कुल सही कह रहे, प्रेम का बहुत सन्दर्भ है और विक्षोह की पीड़ा जिसमें मिलन अर्न्तनिहित है। यहीं कजरी परम्परा से प्रयोग और राष्ट्रीय चेतना की ओर से मुड़ जाती है स्थूल शब्द रूप में हमको कजरी में प्रेमी प्रेमिका नजर आते हैं परन्तु पीछे का जो दर्शन है वह बहुत बड़ा है, अनन्त है, यह पीड़ा या विक्षोह अपनी आजादी का है। शब्द रूप में प्रेमी या प्रेमिका एक दूसरे को मिलने की बात कर रहे हैं पर यहाँ उनका जो सबसे प्रिय है प्रेमी या प्रेयसी वह आजादी है। वह अपनी आजादी को याद कर रही है उसके भीतर का सूना पन उसकी परतंत्रता और पराधीन होने का है और उसका प्रियतम और कोई नहीं, देश की स्वतंत्रता है जो उसे जब मिल जायेगी तभी उसकी आत्मा और हृदय तृप्त होंगे। राष्ट्र के प्रति प्रेम की यह सघन और सहज अनुभूति राष्ट्रीय आन्दोलन के समय मुखर रूप से राष्ट्रीय चिन्तन का विषय है। अब आप आसानी से समझ सकते हैं कि यह प्रेमी या प्रेयसी कोई स्थूल शरीर या व्यक्ति नहीं है जबकि भारत की आजादी है जिसको पाने की ललक ने अर्न्तचेतना से भावबोध पैदा करते हुये ऐसे गीतों का जन्म दिया।

iz'u % vkt vUrjkZ"Vªh; Lrj ij dtjh dk vkSj dgka n[krs gSa\ dqN mYys[kuh; uke Hkh crk,a dh d`ik djsa\

mRrj % आज पूरी दुनिया में ऐसे बहुत से देश हैं जहाँ पर कजली की लोकगीतों की प्रस्तुतियाँ बराबर होती रहती है, जहाँ–जहाँ भोजपुरी, अवधी, हिन्दी को समझने वाले लोग हैं तथा भारतीय सांस्कृतिक चेतना से आबद्ध हैं वह सभी कजली की प्रस्तुतियों को भरे–पूरे मन से सराहते हैं। मारीशस, सूरीनाम, फिजी आदि देशों से होते हुए अब सिंगापुर, इंग्लैण्ड, दुबई, अमेरिका और आस्ट्रेलिया तक लोक गायकी कजली

की पहुँच है, स्वीकृति है। अब देखिये पद्मश्री से सम्मानित वरिष्ठ लोकगायिका शारदा सिन्हा जी और पद्मश्री मालिनी अवस्थी जी ने लोकगीतों को और कजली को आज इतना विस्तार दिया कि वह घर–घर तक पहुँच गयी। विशेषतः मालिनी अवस्थी जी ने प्रस्तुतियों से पूरी दुनिया के एक बड़े युवा वर्ग को जोड़ लिया और अपनी देश–विदेश की प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी कला, संस्कृति और लोक भाषा के प्रति सम्मान और सर्जना का भाव पैदा किया। सच पूँछिए तो कजली की इस व्यवहारिक सेवा के लिये मालिनी जी का योगदान अनुपम है, अनुकरणीय है, उल्लेखनीय है।

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkothdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

ykd fo/kk dtyh ij ykd fpUrdk] lkfgR;dkjk d
fopkj ,o 'kk/kijd vky[k
vuekly ykd lEink % dtjh

भक्तिगीत, संस्कार गत, ऋतु गीत से लेकर जीवन के विविध पहलुओं से जुड़े इन लोकगीतों में उत्साह, उल्लास पर्व त्योहार, विरह, श्रृगार, सुख–दुख सब कुछ समाहित है। आज हम यहाँ ऋतु गीतों के एक पक्ष पावस गीतों की ही चर्चा करेंगे। वर्षा काल में गाये जाने वाले गीत पावस गीतों की श्रेणी में आते हैं जिनमें कजरी, झूला, चौलर और लावनी प्रमुख हैं। लोक ने सभी को कजरी की संज्ञा दी है। पावस में गाये जाने वाले इन गीतों में कितना रस है, इसे तो सुनकर और पढ़कर ही जाना जा सकता है।

पावस में महिलाओं के श्रृंगार पर्व पड़ते हैं। इनमें कजरी और तीज प्रमुख हैं। यहाँ एक बात और स्पष्ट कर देना जरूरी है कि कजरी के केवल गीत नहीं हैं। कजरी एक पर्व है जो भाद्र पद के कृष्ण पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है। इसकी पूर्व संध्या से आरम्भ होने वाली रात 'रतजगा' के रूप में मनायी जाती है जिसमें सारी रात जागकर गाते बजाते, अभिनय करते उल्लास और आनन्द के वातावरण में इस पर्व को नमन करते हैं। कजरी खेली भी जाती है। जैसे होली खेली जाती है, उसी तरह से कजरी खेलने कीभी परम्परा लोक में चली आ रही है। इसका उदाहरण एक बहुत प्रचलित गीत से मिल जाता है।

dbl [kyl tbcl lkou e dtfj;k
cnfj;k ?kfj vkbl uunh]
r r tkr g vdyh
lx e lxh uk lgyh

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkot hdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

Nyk nfd yfg gi rkgjh Mgfj;k

cnfj;k ?kfj vkb uunh

कजरी का गढ़ तो मिर्जापुर ही माना जाता है। वाराणसी में भी कजरी खूब गायी जाती है। पूरे पूर्वांचल में बरसात भर कजरी का गायन होता है। गाँवों में चौधट्ट होता है जहाँ महिलाएं कजरी आधी रात तक गाया करती हैं। बड़े गाँवों में कई चौधट्टे होते हैं। हर मुहल्ले के चौधट्टे पर औरतें घर के काम काज से खाली होकर वहीं जुट जाती हैं और अपने गायन से पूरे वातावरण को रससिक्त करती हैं। ज्यादातर उल्लास, श्रृंगार और विरह गीतों का ही समावेश होता है। श्रृंगार के संयोग सुख से विरत होने के नाम पर नायिका यहाँ तक कह जाती है कि–

chju Hkb;k vbyl vuob;k gA

Iouok ei uk tbcl uunhA

दूसरी ओर बिरह व्यथा से पीड़ित नायिका कहती हैं–

fe tkiij dbyk xiy tkj gk

dpkMh xyh Iu dbyk cye

ये गीत बहुत प्रचलित हैं और पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। श्रृंगार के पर्व पर नायिका मेंहदी लगाने की इच्छा व्यक्त करते हुए पति से आग्रह करती हैं।

fi;k egnh fy;k; ekrh>hy I

tk;d Ikbdhy Iuk

tkd egnh fy;k; nk

NkVh uunh I fiIk; nk

viu gFkok I yxk; n dkVk dhy I

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkothdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

tk;d lkbdhy luk

मोती झील वाराणसी में राजा मोतीचन्द्र की कोठी है। बहुत बड़े घेरे में आम लीची के बगीले के साथ अनेक प्रकार के दुर्लभ वृक्ष वहां थे। कजरी खेलने में छोटा बड़ा, ऊंच नीच का अन्तर एकदम मिट जाता था। वहाँ सम भाव से सभी वर्गों के लोग शामिल होकर लोकपर्व को मनाते थे। राज परिवार भी लोक के साथ इस पर्व पर जुड़ जाता था। एक कजरी इसी भाव भूमि से ओतप्रोत है जिसमें रानी कहती है–

ge tbcl jktk [kyu dtfj;k Mlkbgk jk[;kuk

jkx [kyh iyfx;k Mlkb gk jk[;kuk

dtjh [kyr Hkbyh vk/kh dh jfr;k iBkb gk fngyuk

jktk n n B flifg;k iBkb gk fngyuk

सिपाही लौटकर आते हैं और राजा से शिकायत करते हैं–

lkB pfydok e vxgj jfu;ok [kyr ckVh uk

yV /kuh dtfj;k [kyr ckVh uk

राजा नाराज होकर दरवाजा बन्द कर लेते हें। जब रानी कजरी खेलकर लौटती हैं तो बंद दरवाजा देखकर कहती हैं–

[kkyk [kkyk jktk gk ctj dofM;k e Bkf< ckVhuk

jktk vkbdl nvfj;k e Bkf< ckVhuk

राजा कहते हैं–

lkB pfydok e vtgj jfu;ok [kyr jgyl ukAA

yV /kuh ctfj;k [kyr jgyl uk

रानी कसम खाकर विश्वास दिलाती है–

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,oa nLrkost hdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

jke nkgkbZ jktk n'kjFk fdfj;k lf[ku lxuk

ger [kyyh dtfj;k lf[ku lxuk

धुनों में कजरी बहुत सम्पन्न है। इसमें इतनी धुने हैं और इतना रस है कि जी नहीं अघाता। एक बात का उल्लेख आवश्यक है। ऋतुगीतों के कालखण्ड का जो विभाजन हमारे पुरखों ने निर्धारित किया है, लोक ने उसे निभाया। पावस गीतों की अवधि सबसे लम्बी है। इसकी शुरूआत गंगादशहरा से होती है और समापन विजयदशमी पर होता है। विजयदशमी के बाद कजरी नहीं गायी जानी चाहिए। इसी तरह से बसन्तगीतों के लिए जो अवधि निर्धारित की गयी है व वसन्तपंचमी से रंगोत्सव के दिन यानी चैत्र कृष्ण प्रतिपदा तक सीमित है। उसी दिन होती गीतों का समापन करते हुए चैता चैती और घाटों की शुरूआत होती है जिसे अक्षय तृतीया तक गाने की प्रथा रही है पर व्यवहार में आज कुछ और ही है जो ऐसा है कि उस पर कुछ बोलने से बेहतर है चुप रहना। अपने में सिमटकर सुनकर एक चुभन जीती हुई हमारी पीढ़ी केवल तमाशा देख रही है।

एक युगल गान है। नायक, नायिका से कहता है कि दरवाजा खोलो हम कमाने के लिए विदेश जायेंगे। उस पर नायिका क्या कहती है। दोनों के इस संवाद से भरी यह ढुनमुनियाँ कजरी बहुत ही रोचक और सीख भरी है। ढुनमुनियाँ कजरी वृत्त बनाकर झूम–झूम कर गाने कीपरम्परा रही है। गाँवों में पुरूषों का वर्ग भी ढुनमुनियाँ गायन से जुड़ा है। उनके अखाड़े भी हैं।

uk;d % *रूनझुन खोला न केवड़िया हम बिदेसवाँ जइबै ना*

ukf;dk % *जइतू हू राजा है बिदेसवाँ जइबाना*

अरे पर दे सवाँ जइबाना

हमारे भइिया के बलाय दा हम नइहरवाँ जाइबै ना

uk;d % *जउतू हू रनियाँ हो नइहरवाँ जइबूना*

ukf;dk % *जउतू हू राजा हो रूपइया लेना ना*

जइसन बाबा घर वा रहली वइसैं कइके जइदाना

इस प्रकार नायक चुप हो जाता है और अपने विदेश जाने का इरादा बदल देता है। बाहर कमाने जाने के बजाय अपने यहाँ रहकर ही मेहनत कर रोजी रोटी चलाने का निश्चय करता है।

कजरी के इतने प्रकार, इतनी शाखाएं उपशाखाएं हैं कि एक–एक की चर्चा हो तो काफी बड़ा आलेख हो जाय। मोटे तौर पर देखें तो दो भागों में इन पर बात की जा सकती है। एक नारी स्वर प्रधान, दूसरा पुरूष स्वर प्रधान। नारी स्वर के गीतों का बाहुल्य है। व्यापक रूप से लोक गीतों में नारी स्वर के गतों की बहुलता है। एक वक्तव्य में किसी आचार्य ने कहा था लोकाः स्त्रियाँः।

कजरी की लोकप्रियता उसकी मिठास से है। उसमें समाहित कथ्य से जो जीवन के मधुर क्षणों से लेकर श्रृंगार और विरह की मर्मस्पर्शी घड़ियों तक को अपने में समेटे हैं। कजरी में एकल और युगल गायन से लेकर अखाड़ों तक की परम्परा रही है। अखाड़े वाले मर्दानी कजरी और शायरी कजरी गाते थे। अखाड़ों की संख्या घटने से इसके गायन की परम्परा भी प्रभावित हुई है। हम यहाँ लटके वाले कजरी गीतों की चर्चा करेंगे। लटके गीत के बोल के साथ अन्त में टुकड़े की तरह जड़े होते हैं यह जड़न अंगूठी के नगीने जैसी होती है। यहाँ हम कुछ गीतों के उदाहरण रख रहे हैं जिनसे इसकी पूरी बात सामने आ जाएगी। एक युगल गान है जिसमें प्रश्नोत्तर मिलते हैं। हर पंक्ति के अन्त में लटका लगा है–

dgok¡ lS vkcyS dkjh cnfj;k iMyS >hj&>hj cfu;k¡

xkb;k¡ dgok¡ lS vkoS gfj;fj;k iMyS >hj&>hj cfu;k¡

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkotdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

i;:c l; vkcy; dkjh cnfj;k iMy; >hj&>hj cfu;k

xkb;k lxok ybvkokgfj;fj;k iMy; >hj&>hj cfu;k

dkd vkcy; dkjh cnfj;k iMy; >hj&>hj cfu;k

गोइयाँ कहवाँ से आवै हरियरिया पड़ैले झीर–झीर बुनियाँ

झीर–झीर बुनियाँ इस गीत का लटका है। यही इसका नगीना है जो इस गीत की मिठास को न केवल बढ़ाता है बल्कि गायन में जो माधुर्य उभरता है, वह सहज ही मन को छूता है। जो कुछ भी कहा गया है, सब सामान्य हे पर लटके में कुछ और ही है। फिर–फिर पड़ने वाली बूँदों में भिगोकर प्रकृति एक मधुर रस का संचार करती है। यहाँ एक बात और स्पष्ट कर देना आवश्यक है। गीत में झीर–झीर कहा गया है और बाद में फिर–फिर। इसमें भ्रम नहीं होना चाहिए। शब्द फिर–फिर ही है पर गायन में उसका उच्चारण झीर–झीर होता है, इसलिए उसे उसी प्रकार से लिखा गया है।

एक दूसरे लटके का उदाहरण–

ryok ryb;k e [kyk ygjh ;k vcj e;uok uk

tbl Ncy; ijku Hkkj gfj;k vcj e;uokuk

/ku gh deku rku vkcy; cnfj;k vcj e;uok uk

/ku gh deku rku vkcy; cnfj;k vcj e;uok uk

Hkkj cku rCc ped fctfj;k vcj e;uok uk

इस गीत में लटका है– अब रे मयनवाँ ना। इसी तरह एक लटका है– मोरे रामा जो अंतरे में लगता है।

?kfj ?kfj d cnjok cjl jg

fg;jk ijl jg uk

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkothdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

iM ifu;k d ?kjok ekj jkek

Hkht tkyk vpjok kj jkekg

tk; cnjk fi?ky

po cu&cu ty

gypy gk; ft;jk rjl jg

fg;jk ikl jguk

इस सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए हम यहाँ शायरी के बारे में जो कुछ कहना चाहेंगे। शायरी कजरी अखाड़े वाले गाते हैं। विषय वस्तु केवल विरह श्रृंगार ही नहीं, अपितुकई ऐसे पक्ष होते हैं जो लोक से जुड़े रहते हैं। देश काल और समय–समय पर घटने वाली अनेक घटनाएं भी उसमें सम्मिलित होती है। देश की राजनीति भी उससे अछूती नहीं रहती। आजादी की लड़ाई के समय तो ंअग्रेजों के खिलाफ ऐसे ऐसे गीत लिखे गये जिन्होंने जन आन्दोलन को न केवल ऊर्जा प्रदान की बल्कि उसे और गतिमान भी किया। दो पंक्तियां–

xkj rkgj dkju gej ?kj e cMk coky Hk;y

r ukgh tkuy , xkjh geu d dk gky Hk;y

तोड़वाली कजरी बहुत लोकप्रिय है। दो तोड़, तीन तोड़ जैसी संज्ञाएं इसे गायकों ने दे रखी है। इसके महत्वपूर्ण पक्ष है इसके पाँच अंग। इन पाँचों अंगों के नाम करण इस प्रकार हुए।

1. मुखड़ा, 2. अंतरा, 3. लटका, 4. उड़ान और 5. टेक। इनमें मुखड़ा की तरह टेक भी होता है। अंतरे सभी एक ही मीटर में होते हैं। उड़ान की गति भी एक जैसी है पर लटका बदल जाता है। हर अन्तरे के बाद लटके की धुन बदलती रहती है। लेकिन सब कजरी में ही बाँधकर चलने वाली धुने होती हैं। अगर चार अंतरे का गीत है तो चार लटके

हों, सभी की धुनें भी अलग ही होंगी। फिर उड़ान के बाद टेक पर आ जाते हैं। इस कजरी के लटके भी कमल के गीत के रूप में होते हैं। उन्हें अलग कर दिया जाए तो उनका अपना अलग अस्तित्व दिखायी पड़ता है। इस कजरी में जुड़कर अन्तरे के बाद लटके के रूप में प्रयुक्त होकर उसमें चार चाँद लगा देते हैं। चार पाँच अन्तर की एक शायरी कजरी अखाड़े वाले गायक एक घण्टा से भी अधिक समय तक गाते हैं। उनके गायन में मुखड़े की बार–बार आवृत्ति और टेरी कहने वालों की पुनरावृत्ति, इसकी अवधि बढ़ाती है। सुनने में अच्छा लगता है। कभी–कभी तो इसमें कोई ऐतिहासिक या पौराणिक कथा पिरोई होती है। कोई घटना हो गई तो उसका भी उल्लेख होता है।

केवल वर्षा वर्णन से जुड़ी एक शायरी कजरी का नमूना देखें–

cnfj;k ?kfj&?kfj dS fjef>e fjef>e ikuh cjlS

eku/uk euekuh cjlS] eku/uk euekuh jlS uk

यह तो रहा इसका मुखड़ा जिसे लीडर कहता है और टेरी कहने वाले उसे दुहराते हैं। फिर इसी को चढ़ाकर कहते हैं और तब सामान्य गति पर आते हैं। इस तरह से मुखड़े के गायन की चार पाँच आवृत्ति हो जाती है। फिर अन्तरा जिसे लीडर अकेले कहता है लेकिन चौथी पंक्ति की आवृत्ति टैरी कहने वाले दो तीन बार कहकर सम पर आते हैं। ठीक यही स्थिति उड़ान में भी आती है। उसकी भी आवृत्ति के बाद लीडर उड़ान के साथ टेक कहता है। टेक वाली पंक्ति को टेरी कहने वाले दुहराते हैं और मुखड़े को चढ़ाकर कहते हैं, फिर भी उसकी सामान्य गति में आते हें। इसकी प्रस्तुति बहुत ही मोहक और चिंत्तकर्षक होती है। कजरी के दंगल हुआ करते थे जिसे सुनने के लिए सारी रात भीड़ जमा रहती थी। आमने सामने अखाड़े और बीच में श्रोता बैठते। सवाल जवाब के क्रम जो बहुत चुमने और लगने वाली बात में होते, गा देते थे। उसके जवाब में उससे तीखा प्रहार दूसरी ओर से हो

जाता, जो आगे चलकर बहुत फूहड़ हो जाता है। लोक ने इस फूहड़पन को स्वीकार नहीं किया, जिस कारण यह परंपरा से हटने लगी और आज कजरी के खासकर शायरी कजरीके अखाड़ों की संख्या पहले की तुलना में बहुत कम हो गयी है। कजरी के अखाड़ों में पूर्वांचल में सर्वाधिक लोकप्रिय सीखड़ मिर्जापुर के बफ्फत का अखाड़ा था। मिर्जापुर तो इसका गढ़ ही है। वहीं एक से एक गुणीजन रह चुके हैं। कुछ वर्षों पूर्व दिवंगत मुन्नी लाल जी तो कजरी आचार्य माने जाते थे।

अन्त में शायरी कजरी के एक गीत के कुछ अंश–

e|[kMk& *बदरवा घेरि–घेरि के रिमझिम रिमझिम पानी बरसै ना*

मानैना मनमानी बरसै, मानैना मनमानी बरसे ना

vrjk& *उमड़ घुमड़ के चली घटा नभ के अंगना में घिर आइल*

सुख के सोन चिरइया कतहूँ से नयना में तिर आइल

डबडब आँख गगन कैलाग लेके गहन तिमिर आइल

दूर देश से बून–बून में बस के बरखा फिर आइल

yVdk& *पड़ैले रस बुनियाँ हो मोरी गोइयाँ*

आँगन भीजै सिवनवाँ मीजै

भीजैले मोरी दुनियाँ हो मोरी गोइयाँ

गँवई गवई दुआरे दुआरे

उठैले ढुनमुनियाँ हो मोरी गोइयाँ

नहकै बदरिया के अंगूरी बिरावै

किरिन अस गुनियाँ हो मोरी गोइयाँ

mMku& *बन्है लालगल फिर मनमें आस*

बुताइल कबसे लगल पियास

Vsd& *घास हरियाइल चारो ओरियाँ धानी धानी बरसै*

मानैना मनमानी बरसै मानैना मनमानी बरसेना

यहाँ तक गीत का एक चरण होता है। इसे प्रस्तुत करने मेंअखाड़े वाले दस से पन्द्रह मिनट आसानी से ले लेते हैं। अगर चार पाँच अंतरे का गीत है तो एक घण्टे का समय तो लग ही जाता है।

एक विधा ककहरा गाने की रही है। इसमें 'प' वर्ग एक दम नहीं आता। पूरा गीत गाएंगे और होंठ नहीं मिले। चलते–चलते एक बात और याद आ गई। एक वक्त था जब साड़ियों पर तरह–तरह के छापे चलते थे। किसी साड़ी पर तितली छपी तो किसी पर मछली किसी पर तोता तो किसी पर मैना। ऐसे ही एक गीत चार पंक्तियाँ रखते हुए विशेष आग्रह है कि इसे खूब अच्छी तरह पढ़ें और गुनें कि चौथी पंक्ति में क्या बात कही गयी है–

gekjh pqujh ij cbBy eSuok mMk;s ukgh s mMs ,gjh

gekjh NhfV;k ls Nidy lqxuok ckyk;s ukgh cksys ,gjh

gekjs vkBok ij cbBy frrfyd mMk;s ukgh mMs ,gjh

gekjs vpjkrj dqgqds dkbfy;k Mkyk;s ukgh Mkys ,gjh

ऐसी है हमारी लोक परम्पराओं की अनमोल धरोहर जिसका एक छोटा उदाहरण इन कजरी गीतों के माध्यम से आप तक पहुँचाने की कोशिश की।

ykd fo/kk d t yh 'kk/k ,o nLrkos thdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

d t yh

प्रसंग— वन को जाते समय सीता का सास तथा अयोध्या छोड़ने का दुख राम ने निवेदन।

धीरे चल हम हारी ए रघुवर। —टेक—

,d r NVyk ekj ukd dh ufFk;ok] nkl j NVyh egrkjh , j?kojAA

,d rks NVyj ekj xjs dh gl fy;k] nkl j NVyk >hu lkjh , j?kojAA

,d rks NVyk uxj v;k/;k] nkl j NVyk egrkjh , j?kojAA

राम के साथ वन को जाती हुई सीताजी कहती है कि ऐ रामचन्द्र। तुम जरा धीरे चलो, मैं चलने से श्रान्त हो गयी हूँ। एक तो मेरे नाक की नथिया छूट गयी है, दूसरी माता कौशल्य छूट गयी है। मेरे गले की हसुली और पतली साड़ी भी अयोध्या में छूट गई, अयोध्या नगरी और माता कौशल्य को भी छोड़ना पड़ा।

ckjgekl k

प्रसंग— लक्ष्मण को शक्ति लगना, हनुमान का संजवनी बूटी लाना, लक्ष्मण को होश आने तथा सीता की प्राप्ति का वर्णन।

pbr ekl ?kj NVs j?kifr dh] ou es foifr ijhA

dkyk ufn;k ikj mrj xbyh] rils Hkkl /kjhAA

?kke yxd cblk[k es ykxr] ng es uhj pyhA

lhrk gju Hkby fi rk eju Hkby foifr ds foifr ijhAA

tsVoku yxu ygeu dks] iqjfgr Hkb;k ijhA

okn lq[ku crmys l thou rc y{eu mcjhAA

jke lfej guqeku thxbys /koyk fxfj dbys i;kuA

rc rd p<ys ikl vlkMk lkFk ?kVk f?kj vkuAA

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkothdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

lkou ekl lqgkou ltuh] lthou lf> uk ijhA

ckny xjtS fctjh ped egkchj th Øk/k HkjhAA

Hkknks jsu Hk;kou ltuh rfudks lf> uk ijhA

pgq vf/k;kjh fnlk ukgha l>s] jke lfej ds ohj pyhAA

dqokj gky cqgky yNeu ds xkn es yds foy[kkbZA

ckuj Hkkyw ds dou fBdkuk] Qy ij xbys yqHkkbZAA

ekl dkfrd es vklk ykxy lthou vbgs rRdkyA

jk; jeslj iqtysa iqtyh fcjfgu ckrAA

vxgu ekl vfr xgu okfV] tkur ldy lalkjA

thfg le; yokVs vbys ohj tks viuk fl[kk ij yxs igkjAA

iql ekl tBkfj iMrk] tl dqBkj ds /kkbZA

uhk ds cVh figys y{keu ds] mBys chj vfxMkbZAA

ek?k ekl es ykxyk ipehf] l[kh ykx djyk flxkjA

Qkxqu es jix gkyh epyk] mMsyk xqyky vhjA

jkou ekfj ds lhrk mckjs] ikj mrj xbys jke th ohjAA

चैत के महीने में रामचन्द्र का घर छूट गया अर्थात् वे अयोध्या में बनवास के लिये चले और वन में जाते ही उन पर विपत्ति पड़ी। वे काली नदी के पार उतर गये और तपस्वी का वेश उन्होंने धारण कर लिया।। वैसाख मास में उनके शरीर में धूप और लू लगगयी और देह से पसीना बहने लगा। इसी समय सीता का हरण हुआ, पिता का मरण हुआ और विपत्ति के ऊपर विपत्ति पड़ती गयी। जेठ के महीने में लक्ष्मण जी को बाण (शक्ति) लगा और वे मूतर्छत होकर जमीन पर गिर पड़े। सुषेण वैद्य ने संजीवनी बूटी नामक दवा लक्ष्मण के लिये बताई और कहा बूटी लाने पर ही उनके जीवन की रक्षा हो सकती है।

dtjh esa jk/kk d".k dk isze vfHkO;fDr

कजरी का नामकरण श्रावण मास में घिसे वाले काजल सरीखे बादलों की कालिमा के कारण हुआ है। काजल शब्द 'काजल' का अपभ्रंश है, इसीमे 'कंजली' शब्द बनता है जिसे बोलचाल की भाषा में 'कजरी' या 'कजरी' कहा जाता है। काजल–सरीखे कजरारेबादलों को देखकर गाने की कल्पना को लेकर ही वर्षाकालीन गीत विशेष को कजली या कजरी नाम दे दिया गया।

सावन के मनभावन महीने में भोजपुरी प्रदेश में जो गीत गाये जाते हैं, उन्हें 'कजली' कहते हैं। सावन में प्रकृति सर्वत्र हरी दिखाई पड़ती है तथा मेघों के आगमन के साथ ही प्रकृति मे एक विचित्र प्रकार की मादकता संचारित होती है। उत्तर प्रदेश एंव बिहार के रस–भरे लोकगीतों में 'कजरी' का महत्वपूर्ण स्थान है। 'कजरी' मूलतः लोकनारी का पावसकालीन आभरण है। जिस तरह बसन्त के आते ही लोक–हृदय 'फाग' के रंगों में सराबोर हो उठता है, चैत के लगते ही ग्रामीण अँचलों में 'चैती' के स्वर उठते हैं, उसी प्रकार सावन आते ही आकाश पर काले–कजरारे सघन मेंघों, चमकती बिजुरिया और रिमझिम बरसते पानी के बीच कजरी–गीतों के बोल लोक–हृदय को आलोड़ित कर देते हैं। झूलों पर झूलती ग्रामीण युवतियों की मधुर स्वर–लहरी वातावरण को मादक बना देती है और सारे वातावरण में 'कजरी' के गीत बढ़ती पेंगों के साथ तैरने लगते हैं। भारत में प्रत्येक ऋतु का पृथक् संगीत है। प्रत्येक ऋतु देश के सामूहिक सौन्दर्य–बोध की परिचायिका है। शरद ऋतु में धान के खेतों और कमल–वनों का मोहक सौन्दर्य आँखों को ठगता है। वसन्त में लगता है टेसू और सेमल का मेला, और ग्रीष्म में शाखाओं पर झूलते हैं अमलतास के फूल। पावस में वष्र्र का ठण्डा सोंधा जल लता और तरू–पल्लवों में सख्यभाव जगाता है। मेघाच्छन्न आकाश लोकगीतो का उद्‌गम बनता है और किसी न किसी रूप में भारत का प्रतयेक जनपद्र वर्षा–मंगल की प्रेरणा से झूम उठता है। इन मेघों को द्रोण की संज्ञा दी गई है। मेंघो के साथ किसान का मिलन–सूत्र जुड़ता है, तो चारों ओर का चित्रपट स्वतः प्राणवान् हो उठता

है। हर कोई मेघों का शकुन मनाकर धरती का श्रृंगार करना चाहता है। सूखे सरोवरों का मुख तक छलका देने का श्रेय केवल मेघों को है।

वैदिक सूक्तों में इन्द्र का स्थान अंतरिक्ष सूकतों में इन्द्र का स्थान अंतरिक्ष है और वह जल बरसाता है, इसलिए इन्द्र राजा के गीत में उसका आह्वान किया जाता है।

gkyh gfy cjl bUuj nork
ikuh fcu iMbNb vdky gk jkekA

वर्षा में मेघों को देखकर किसान प्रसन्नता में झुम उठते हैं। और वर्षा की प्रतीक्षा करने लगते हैं। खेत खेत में, गलियो चौबारों में सुरीले कण्ठों में उतर आते हैं, मलार और कजरी के भावभीने स्वर। बगीचे में झूला झुलती हुई युवतियाँ रिमझिम बूंदो का आनंद लेती हुए गा उठती है–

lkou dk eghuk e?kk fjef>e cjl
BMh BMh fc;kj ckny cjl g Qgkj
,l e gkr gkr l[kh fi;k th gekjA

कजरी के रसभीने भाव–भरे स्वर मन को इतने गहरे तक छूते हैं कि उसके शब्द शरीर की नसों में रोमांच जगाने लगते हैं। उल्लास के गीत हो तो पाँव थिरकते हैं और करूणा के गीत हो तो आँखें बरसती है–

vnjk l cn[kk cn[kk l ikuh
ikuh d fivkj Hkb Hkbyh xekuh
QfV&QfV fudyb lufg;k d v[kvk
jkb&jkb jkoyk cnjok vdlvkA

लौकिक साहित्य में रिमझिम–रिमझिम नीर बरसता है वैसे ही सन्त साहित्य में झिलमिल–रिमझिम नूर बरसता है।

कजरी के उद्भव का वास्तविक कारण चाहे जो कुछ रहा हो, किन्तु इतना निश्चित है कि इसके मूल में बादलों की श्याम छटा एक बड़ा कारण रही है। शैली तथा स्थानीयता की

दृष्टि से कजरी के तीन प्रमुख भेद हो जाते हैं। भोजपुरी कजरी, बनारसी जरी, मिर्जापुरी कजरी।

कजरी से जुड़े हुए कुछ ऐसें भी गीत हैं जो पावस में कजरी गीतों के समान ही महत्व रखते हैं बारहमासा चौमासा, झूला, सावन, मलार, आदि ऐसे ही गीत हैं।

ckjgekl k& ये गीतों वर्षा ऋतु में गाये जाते हैं। इन्हें स्त्री–पुरूष दोनों ही गाते हैं। इनमें बारहों महीनों का बड़ा रूचिकर वर्णन होता है। ऋतु–गीतों में यह बड़ा लोकप्रिय है। इन गीतों में बहुधा कृष्ण की वियोगिनी राधा या गोपियों को आधार बनाया जाता है। इस गीत की परम्परा लोक साहित्य में ही नहीं, शिष्ट–साहित्य में भी जाती है। वस्तुतः बारहमासा वियोग के गीत है। ये प्रकृति–वर्णन के गीत है, किन्तु प्रकृति का आलंबन रूप में वर्णन के गीत है, किन्तु प्रकृति का आलंबन रूप मेंव र्णन न होकर वियोग के उद्यीपन विभाव का वर्णन होता है। बारहमासा गीतों में किसी वियोगिनी के बारह महीनों के मनोभावों का चित्रण मिलता है। यह मनोभाव कहीं तो किसी प्रोषितपति का नायिका द्वारा व्यक्त होता है और कहीं गोपियों अथवा राधा द्वारा एक बारहमासा में गोपियाँ उद्भव को सबेरे–सबेरे मथुरा भेजी है कन्हैया को मना कर ले आने के लिए।

m/kks Hkksj l s e/kqiqj tko gks
dUgS;k dks euk; nh;m ukA

Nek l k& छमासा बारहमासे का ही एक संक्षिप्त रूप है। इसका वर्ण्य–विषय बारहमासा की तरह होता है।

pkSek l k& बरसात के कुल चार महीनों की विरह–व्यथा इन गीतों पाई जाती है। समय की दृष्टि से ये बारहमासा की अपेक्षा अधिक गाये जाते हैं, कयोंकि इनको गाने में समय कम लगता है।

eykj& कजरी का ही रूप मिथिला में 'मलार' नाम से प्रचलित है। पावस में 'मलार' स्त्री–पुरूष दोनों गाते हैं लेकिन दोनों के गाने के ढंग अलग है। औरतें इन्हें गाने के समय किसी साज–बाज की मदद नहीं लेती, वे इन्हें हिंडोले पर बैठकर गाती है। पुरूष इन गीतों

को साज बाज के साथ गाते हैं।

lkou xhr& सावन के गीतों में अधिकतर भाई–बहन के प्रेम का वर्ण न मिलता है।

>wyk ;k fgMksyk& बारहमासा गीतों से विपरीत झूला या हिंडोला गीत में संयोग श्रृंगार की प्रधानता होती है। इनमें अधिकतर बगीचों में राधा–कृष्ण या नायक–नायिका के झूला–झूलने तथा मान मनुहार आदि का वर्णन मिलता है। कहीं रेशम की डोर में सोने का झूला बगीचे में डालकर राधा–कृष्ण के झूलने का वर्णन है।

>wyk >wys jkf/kdk l;kjh
lax eas d".k ejkjh ukA
lksus ds ikyuk js'ke ds Mksjh
dnEc ds Mkjh ukA

तो कहीं नायिका द्वारा नायक को झूला झूलाने का वर्णन है, और कहीं प्रेमा–लाप, हँसी–ठिठोली का चित्रण है। प्रेम की पेंगें बढ़ाई जा रही है और झूले के आने–जाने के साथ सुख की हिलोर आ रही है–

>wyk&>wys uUnyky lax jk/kk&xksjh
cgs jk/kkth iqdkj iax ekjB ljdkj
mMs ifx;k rkgkj ekjh mMs pqujhA

सावन की भींगा मौसम हो और आम की डाल पर झूला पड़ा हो तो कुमारी ननद का मन झूलने के लिए मचल उठता है। वह भाभी से झूला–झूलने के लिए चलने का आग्रह करती है। किन्तु उसकी भाभी प्रोषितपतिका है। सावन की बुँदे उसके शरीर में दाहक लगती है, इसलिए झूले के प्रति उसी अरूचि स्वाभाविक है। कुछ झूला–गीतों का विषय आधात्म से संबंधित है–

मूलतः कजरी का वर्ण्य–विषय प्रेम है, इसके अन्तर्गत श्रृंगार के उभय पक्ष–संयोग एवं वियोग की झाँकी मिलती है– कजरी गीतों ननद–भावज के संबंधों की मधुरता भी चित्रित है। कजरी के संयोग पक्ष में श्रृंगार का जैसा मनोहारी चित्रण है, वियोग पक्ष की करूणा भी वैसी

ही हृदयग्राही है। पावस में वियोगिनी विकल हो उठती है। मेघ बरसने को आये, किन्तु इसके प्रियतम नहीं आए–

';ke ugha vk;s vkbZ ';ke cnfj;kA

dtjh xhrksa esa dUgS;k&jk/kk dh izse HkfDr& श्रृंगार से विशेष संबंध होने के कारण कजरी गीतों में बहुधा श्री कृष्ण की चर्चा आती है। एक गीत में उस समय का वर्णन है जब पूतना ने श्रीकृष्ण के वध का प्रयास किया, किन्तु कृष्ण अपने बल से सुरक्षित बच गये, उलटेक पूतना को ही मारकर उन्होंने यमपुरी पहुँचा दिया।

dl egfy;k ls fudys jkuh iwruk

pfy Hkbyh uUn ds egfy;k , gjh

ckydk mBkb jkek Nfr;k yxorh

nqukS Nfr;k tgj yxorh , gjhA

जहाँ कहीं झूला झूलने का वर्णन आया है, वहाँ कृष्ण कजरी के अधिनायक और राधा नायिका बनी हैं–

>wys >wys jkf/kdk l;kjh

lax esa d".k ejkjh ukA

कहीं कन्हैया राधा की गलियाँ में चूड़िहार का रूप धरे भ्रमण कर रहे हैं। राधा चुड़ी पहनने के लिए उन्हें बुलाती है। कृष्ण चूड़ियाँ पहनाने के बहाने राधा की कलाइयाँ दबाते हैं। राधा उन्हें पहचान लेती है।

/kjs gfj :i efugkj dk

Åps vVk ls jk/kk cqykos

bVs ykvk yky ub pfj;k js

dj el dS pfj;k js

fuj[k j;s :i jk/kk l;kjh dkA

और कही राधा ग्वालिन बनकर दही बेचने जाती है तो कृष्ण मनिहारी बनकर उसे

छलते हैं–

Xokfyu cuh jkf/kdk l;kjh

d".k efugkfju , jkek

एक गीत में राधा मान करती हुई पाई जाती है। उसे शिकायत है कि जिन सखियों को कृष्ण ने फुल दिये हें, उन्हीं के पासे जाये। कृष्ण बाग से फूल चुनकर लाये हैं। उन्होंने सबको फूल बाँटे लेकिन राधा की बारी आते–आते पुष्प समाप्त हो गये। इस बात पर राधा को गुस्सा है। वह उत्तर देती हैं–

, th ftr ckVh >kyh ij Qwy

mrh iMh lk jgh Hkxokuk

कृष्ण प्रतिकूल परिस्थिति के प्रति राधा का ध्यान आकर्षित करते हैं। बादल बरस रहे हैं और भगवान भींज रहे हैं, उन्हें अँधेरी रात में डर लग रहा है लेकिन राधा–कृष्ण से घर की दीवारें भी नहीं छुलाना चाहतीं क्योंकि भित्ति पर की चित्रकारी नष्ट हो जाएगी। राधा के ये विचार कृष्ण को खल जाते हैं और वहाँ से चले जाते हैं। राधा को अब पछतावा होता है वे कृष्ण की खोज में निकलती हैं। कृष्ण एक स्थान पर सोते हुए मिलते हैं। कातर होकर राधा जार–जार रो उठती है।

वैसे तो समस्त पावस गीतों में ही प्रेम–भावना का प्राधान्य है किन्तु कजली, सावन एवं बारहमासा में यह भावना विशेष रूप से देखी जा सकती है। इन रागों में कहीं तो राधा–कृष्ण प्रेम के प्रतीक बनकर आते हैं तो कहीं दाम्पत्य प्रणय प्रधान होता है।

इस तरह के अनेक पारिवारिक एवं सामाजिक बात इन गीतों पाये जाते हैं। रस भाव, कला, सामाजिक वातावरण आदि सभी को समाहित करने एवं इन गीतों भारत का अतीत एवं ऐतिहासिक गौरव सुरक्षित है। इनमें प्रयुक्त कथायें ऐतिहासिक परम्परा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। तथा कजरी में राधा–कृष्ण की प्रेम भक्ति कूट–कूट कर भरी हुई है। ये कजरी गीत में राधा–कृष्ण के भाव–प्रणव होने के साथ–साथ वर्णनात्मक अधिक बिजली, बादल तथा गर्जन उसके विशेष अस्त्र हैं, जो लोक–नारी के हृदय पर सर्वाधिक प्रभाव डालते हैं, कृष्ण

की वंशी में राधा के पुकार की धुन हाती है राधा–कृष्ण जब अपनी प्रेम प्रसंग में विलिन रहते हैं तब नन्हीं नन्हीं बुंदे, पपीहा की पुकार, कोयल की कुक, मोर का शोर, घनघोर घटा, बिजली की चमक ये सब पुरे वातावरण में मनुष्य के शरीर और हृदय को पवित्र कर दती है। आज भी राधा–कृष्ण की प्रेम भक्ति हमारे विचारों में है जो मन को पवित्र करती है एवं उनकी प्रेम लीला से आपस में प्रेम रखने की प्रेरणा मिलती है।

इस अध्याय में निम्न वर्णित प्रबुद्ध साहित्यकारों एवं लोक कला चिंतकों के लेख संकलित किये गये हैं–

1. डॉ0 भवदेव पाण्डेय
2. डॉ0 हरी राम द्विवेदी
3. डॉ0 मन्नू यादव

उपरोक्त लेख 'सोनचिरईया' एवं 'अनहद लोक' कला पत्रिका से साभार उद्धृत हैं।

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

^^ykd xhrk e ØkfUr d cky**

डॉ0 मन्नू यादव

महात्मा गाँधी जी कहा करते थे कि ग्राम गीतों में भारत की असली आत्मा निवास करती है। पं0 रविशंकर, पं0 ओंकार नाथ ठाकुर, पं0 कुमार गन्धव्र का भी यही मानना था कि लोक संगीत ही शास्त्रीय संगीत की जननी है।

भारत गाँवों का देश कहा जाता है। यहाँ के निवासियों ने हूण, शक, कुषाण, मंगोल, मुगलों, तुर्की, अंग्रेजों के क्रुर थपेड़ों को सह कर जीवन यापन कियें जब जरूरत पड़ी तो इन सभी के खिलाफ क्रान्ति छेड़ने के लिए अपने लोक गीतो से ही प्रहार कर आवाम को संदेश दिये।

1857 की समग्र क्रान्ति के काल मे उत्तर भारत की प्रतिनिधि लोक गायन शेलियों नें अपने–अपने आयामों से जन मानस में क्रान्ति का संचार करती रही। अंग्रेजों के पास जहाँ डाक तार विभाग था वहीं विखण्डित भारत में ये लोक कलाऐं ही संवहन की साधन हुआ करती थी। जिसमें बिरहा, कजरी, चैता, आल्हा, पूर्वी, छपरहिया, झूमर, लचारी, भगैत, बिहू, बाउल, पंडवानी, रसिया, रागिनी, लावनी, कालवेलिया, डमरू, मदारी, बहुरूपिया, जोगिया, विजयमल, लोरिकी, चन्दैनी, खड़ी बिरहा आदि प्रमुख रहे।

बिहार में वीर कुँअर सिंह के घोड़े की वीरता का बखान करता हुआ एक बिरहा का बोल–

ohj dvj flg d uhy dk cNMok
ih;yyk dVkjou n/k
,fn;k jbfu;k ftrbg uhy cNMok
dh lkuok e<bo pkjk [kj]

यहाँ लोक गायक की भावना यह इंगित कर रही है कि लड़ाई बहुत लम्बी है, सेवेरे–सवेरे जल्दी उठकर चलना है, घोड़े की सेवा हो रही है, और गायक यही उस घोड़े से

कह रहा है कि इस बार समर को जिताओगे तो तुम्हारे चारो पैरों में जो लोहे का नाल लगा है उसके स्थान पर सोने का नाल मढ़ा दूँगा।

पटना में पीर अली दिन में पुस्तक बेचते थे तथा रात्रि में क्रान्ति का एलान करते थे, पटना सीटी स्टेशन पर 5 जुलाई सन् 1857 को नील आफिसर के लिए जो आवाज था वह, हिन्दु और मुसलमान दोनों इस प्रकार बिरहा के लय में देते थे–

cxkor d cyi ge cjkxh cu d]
d 'kklu dk rj dpyr jgx]
:d xk u ix ; >dxk u >.Mk
ge ØkfUr dk lkyk mxyr jgx]
;k vyh dgrk Fkk fgUn Hkkb
ctjxh dgrk e lyeku vkbA
; oru g gekjk gekjk jgxk]
bl oru d fy, lj dQu ck/k djd]
fprk, l tk djd tyr jgxA

अंग्रेजों की टूट डालो राज करो के नारे का जवाब हिन्दु–मुसलमान इस तरह देते थे, हिन्दू या अली कहता था और मुसलमान जय बजरंग बली कहता था। इस प्रकार क्रान्ति को एक दूसरे स्थान पर जाते और क्रान्ति की खबर एक दूसरे जिले से जिले में फिर एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में खबर फैल जाती थी। वीर कुवर सिंह की वीरता का बखान करता हुआ चैता गीत–

gFkok e ygy ryfj;k gk jkek
pyy cy dfj;k]
jkr fnu lej e ykgk xgy touok]
ikih vxjtou d dby ,yuok]
fot; ?kk"k djj j.k/kfj;k gk jkek

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

pyy cy dfj;k gk jkek&
viu gkFk dkV fngy vkiu ohj cfg;k]
gl r gl r n'k [kkfrj Hkjyu vfg;kA
jfg;k e gkj Nydfj;k gk jkek]
pyy cy dfj;kA

83 साल की उम्र में वीर कुँअर सिंह ने तलवार से जिस हाथ में अंग्रेजों की गोली लगी थी उसे हंसते हंसते काट कर गंगा में प्रवाहित कर दिये, घर पर तीन दिन तक विश्राम के दौरान, जहर बदन में फैल जाने के कारण उनका अन्तकाल हो गया।

1942 के अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन में सहदेव खलिफा द्वारा गायी गयी कजरी, गीत जिसे बिरहा के लय में गाया गया था।

lr le lR; vfgl k fgUnLrku l fudyk
ckiw d tcku l fudyk] Hkkjr d eLdku l
fudyk uk
tku eku d tjh d xk;d cnh flg eBuk ehjtkij
rxk ogh jgk doy rx dh /kkj cny x;h
xkjk dh ljdkj cny x;h] uk]
tkx Hkkjr ek d ohj]
ykgk fy, lnk lelhj]
gkjh xkjh iyVu] mld xy dh gkj cny x;h
xkjh dh ljdkj cny x;h uk]

अंग्रेजों ने जब भारत कों आजाद करने की घोषणा की उस समय बफ्फत अखाड़े में गायी जाने वाली कजरी गीत को अभी भी यदा कदा लोग गाते रहते हैं।

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkothdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

जब भारत का बटवारा हो रहा था, एक तरफ कट्रपंथ एक तरफ उदार पंथ दोनों को दूसरे से बिछुड़ने की पीड़ा एक पूर्वी गीत में परम्परागत हस्तान्तरण से रामजीपुर निवासी स्व0 रामराज यादव बिरहा गायक अपने मंचों पर पूर्वी गाते थे–

Hkkb: l; yMoyl Hkkb] Hkkb: Hk;: e|nb;k
ubik dbl: pyh] ?kkV: ?kkV: py: ryokj
ubik dbl: pyh]
dfjd:] c|Vokjk pfy xby: cbeuok]
Hkkfj Hky Hkby cfV xby: ekj cruokA
lkuk pkuh ghjk ekrh gj yigy: e|nb;k]
ub;k dbl: pyh]
ckVh xbyh /kkjk e: irokj ub;k dbl: pyhA

इस प्रकार लोक के मन में आने वाली हर्ष एवं विषाद के तथ्य लोक गीतों में बरबस फूट पड़ते हैं। बँटवारे के समय इसी प्रकार दर्द यह पूर्वी गीत बयाँ कर रही है।

मेरइ के गदर से लेकर दिल्ली के लाल किले के लाहोरी दरवाजे तक लोग गीतों में वीरता के भाव फूटा करते थे, बहादुर शाह जफर की वीरता को इंगित करतीहुई एक छपरहिया गीत– (बिरहा के रूप में)

vkf[kj dcy: j[[ky jgh ykg: d xguok gk
xguok gk] tkxk tkxk gej: fdluok gk] fduok gk]

इन दो पंक्तियों में से किसानों में क्रान्ति के संचार का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। लोहे के गहने का मतलब, भाला, तेगा, तलवार से है यह किस काम के लिए रखा रहेगा, ऐ जवानों, किसानों अंग्रेजों पर अूट पड़ी। पटना गजेटियर से प्राप्त इस गीत का प्रदर्शन 11 मई 2007 को लाल किले के प्राचीर से मेरे दल ने 1857 की क्रान्ति के 150वें वर्षगाँठ पर मा0 प्रधानमंत्री व महामहिम राष्ट्रपति के समक्ष पद्मश्री राजीव शेट्टी जी निर्देशन में किया था। सर अब्राहम गिर्यशन के भाषाई सर्वेक्षणों में तमाम ऐसे तथ्य हैं।

इसी प्रकार के तथ्य राव कृष्ण गोपाल के बारे में रागिनी गायन शैली में भी प्राप्त है। वकौल अजमल नागर देश भक्ति के प्रति समर्पित कौरवी गायन शैली की लोक गीत देखें–

Hkkjr ek dh 'kku c<k nh]
jko fd'ku ejk ukgj gk]
vxtk dk [knM ekjk]
Hkkjr l djk ckgj gk&

लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो0 मोहनलाल गुप्ता जी के शोध प्रबन्ध में हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली के अंचल में गायी जाने वाली 'रागिनी' में राव तुलाराम सिंह के चचेरे भाई राव किशन गोपाल के बारे में कहा जाता है कि इन्होंने अंग्रेजी पुलिस अधिकारी रहते हुए 80 अंग्रेजों का सर कलम कर उस क्रान्ति को सम्पूर्ण क्रान्ति बनाने में बहुत बड़ी भूमिका का निर्वहन किया था, ये लोग गुड़गाव के राजा हुआ करते थे, राव तुलाराम जी रंगून में क्रान्तिकारियों की मदद करते करते वही पर दम तोड़ दिये, वहाँ अफगानिस्तान के बादशाह ने उनकी समाधि बनाकर श्रद्धाँजलि दी। मौखिक साक्ष्यों, तथा परंपरागत हस्तान्तरण से ऐसे तमाम अंशों के छोटे–छोटे बोल बरबस हिन्दी भाषी अंचलों में प्राप्त हो जाते हैं। जिनमें क्रान्ति के वीरों के बारे में। लोक स्वर के बोल मिलते रहते हैं। उनका लेखन उस काल में नहीं हो पाया परन्तु एक ऐसा मसाज आज भी है, जो गोचारण पशुपालन, कृषि जीवी संस्कृति के साथ इसे, मौखिक रूप से अपने पीढ़ीगत स्वतः हस्तान्तरण से बचाये हुए हैं। आज जरूरत है उसके प्रलेखीकरण एवं खोज की तथा हूबहूँ आने वाली भावी पीढ़ी को उसी मूल रूप में सौंपने की ताकि परम्परा के साथ–साथ यहाँ की लोक संस्कृति के क्षरण को रोका जा सके।

¼y[kd&Hkkjr ljdkj] lxhr ukVd vdkneh ubl fnYyh }kjk jk"Vh; ijLdkj l lEekfur g½A

ykd fo/kk d t yh 'kk/k ,o nLrko thdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

ykd fo/kk d tjh dk bfrgkl orleku ,o Hkfo"; ij l|ifl) ykd fprd] vkykpd ,o lkfgR;dkj ikO cnh ukjk;.k th d fopkj

प्रो0 बद्री नारायण वर्तमान में गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक संस्थान (इलाहाबाद विश्वविद्यालय) के निदेशक हैं। लोक विधा, लोक परम्परा के क्षेत्र में आपका कार्य राष्ट्रीय स्तर पर रेखांकित किया जाता है। लोक कलाओं के प्रति आपकी संवेदना और उसके हेतु किये गये कार्यों को तमाम शोधार्थी प्रयोग में ले आते हैं। आपके आलेख सम्मानित राष्ट्रीय समाचार पत्रों में बराबर प्रकाशित होते रहते हैं। कविता लोक साहित्य के क्षेत्र में आप के कार्यों को बहुत से सम्मान और अलंकरण प्राप्त हुये हैं। आप एक वरिष्ठ शिक्षाविद् और लोकचिन्तक हैं।

lk{kkRdkj

i'u % dtyh dh ;k=k vkj fodkl d lUnHk e dN crk;\

mRrj % मूलतः विरह, विक्षोह एवं अलगाव ने कजरी की एक संस्कृति पैदा की और इसी सेपरेशन और विस्थापन अथवा माइग्रेशन ने इस लोक विधा को जन्म दिया और एक मजबूत लोक संस्कृति की बुनियादी डाली। कजली वास्तव में विस्थापन के दर्द और अपने प्रिय के दूरी से उपजी हुयी कला है। अलग–अलग समय पर इसके फार्म अलग–अलग हो सकते हैं पर जो इसका सौन्दर्य बोध है और जो इसका दर्शन है वह कुछ मामूली परिवर्तनों के साथ लगभग एक सा है। क्योंकि कजरी वस्तुतः मुख्यतः विक्षोह विस्थापन और विरह का मूलगीत है।

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

i'u % dtyh d ey fof/k d lUnHk e dN dg\

mRrj % लोक में कुछ भी मूल नहीं है, जो भी होता है वह सबका है और साझा होता है, किसी एक का क्लेम नहीं है। एक ही समय में अलग–अलग जगहों पर एक ही तरह की चुनौतियों से और आलोचनाओं से बहुत कुछ पैदा होता है। जाहिर सी बात है अभिव्यक्ति के स्तर पर थोड़ा बहुत परिवर्तन तो होगा पर उसका मूल बरकरार रहता है। यह मूलतः क्रियेटिविटी या रचनात्मकता की गोद से पैदा हुई सकारात्मक उर्जा है। केवल हम मिर्जापुर को ही मूल नहीं मान सकते बनारस का भी उतना ही योगदान है और भी कई जगहों का। हाँ यह जरूर है कि मिर्जापुर और बनारस में कजली का विकास बहुत ही संगठित और सुव्यवस्थित तरीके से होता रहा। जाहिर सी बात है जो भी आर्गेनाइज्ड तरीके से होगी उसकी खुबसूरती और उसका विषय वस्तु सबको आकर्षित करेगा ही। अखाड़ों और गुरूओं की परम्परा ने कजरी के विकास में मिर्जापुर और बनारस को निश्चित रूप से अलग से चिन्हित होने का अवसर दिया है।

अलग–अलग अखाड़ों में स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा और नये तरीके से करने की और कुछ नया करने की भावना ने लोक विधा कजली को विकसित होने में बहुत मदद की और साथ ही साथ स्वाद की विभिन्नता से भी अवगत कराया। जैसे– रसगुल्ला, बरफी, जलेबी, कलाकन्द, खीर कदम, लड्डू हैं तो सब मिठाई ही पर फिर भी सबका स्वाद अलग है, सबकं चाहने वाले अलग हैं, सबका रंगरूप अलग है, समान है तो क्या उनकी मिठास।

i'u % Lok/khurk vkUnksyu e Hkh dtjh dh Hkfedk jgh gA dtjh dh Hkfedk dk vki fdl rjg n[krs g\

उत्तर : निश्चित रूप से और यह एक स्थापित सत्य और तथ्य है कि क्रान्तिकारियों को उत्साहित करने के लिए उनका हौसला बढ़ाने के लिए और अपने मातृभूमि कों स्वाधीन कराने के लिए उस दौर में कजली के लगभग सभी कलाकारों ने भरे पूरे मन से ऐसी कजलियाँ गायी जो राष्ट्रीय एकता और माँ भारती के प्रति समर्पण के

भाव से लिखी गयी थी और ऐसी कजलियाँ जब गायी जाती थी तो आजाद होने के प्रति जो ललक थी उसकी भावना को और प्रबल रूप से संचारित करती थी। ऐसें एक नहीं अनेकों उदाहरण आपको मिल जायेंगे जहाँ पर उस समय के कलाकारों ने कजली के माध्यम से गाँव गली देहात कस्बों में आजादी की ललक और अलख जगायी और अपनी गायिकी और विषय वस्तु के माध्यम से देश की सेवा का एक अनुपम उदाहरण पेश किया। सुन्दर वेश्या का प्रसंग, हरि नागर का सन्दर्भ जबकि बनारस से मिर्जापुर उनका विस्थापन हो जाता है– कचौड़ी गली सुन कइला जैसी कजरी का जन्म होता है। उस दौर की कजरी में आततायी, अधर्मी, जुल्मी, निरंकुश, अभिमानी अंग्रेजों के खिलाफ जो एक जनभावना थी उसको आधार और शब्द कजली के माध्यम से दिया गया था। इसीलिए जन–जन में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह और तिरस्कार की भावना प्रबल हुई और क्रान्तिकारियों और शहीदों के पक्ष में समर्थन के तौर पर सामने आयी।

i'u % D;k dtjh flQZ _rq xhr gS\

mRrj % सीधे–सीधे ऐसे कहना सही नहीं होगा, हाँ यह सही है कि मौसम अर्थात ऋतु से इसकी शुरूआत होती है या उसी की कोख से निकली है ये परन्तु बाद में समय और काल के इतने सन्दर्भ है चुनौतियों को लेकर कि कजरी का जो विषय वस्तु है जो विस्तारि है उसका वह बहुत बढ़ गया और आज भी कजली नित् नये विषयों को लेकर विकसित हो रही है। प्रेम, विक्षोह की गली से निकली कजरी आज अधिकारों की, सामाजिक चेतना की और राजनैतिक उपेक्षा की भी प्रस्तुती करती है अपने विषय वस्तु के माध्यम से। एक तरह से कहा जा सकता है कि बहुत सी चीजें जुड़ती गयी और कजरी विकसित होती गयी।

i'u % fluek esa Hkh dtjh jgh gS D;k\

mRrj % इस विषय पर तो आप ही ज्यादा जानते हैं, आपने तो काम भी किया है, पर हाँ यह जरूर है कि ऐसी पारम्परिक और लोकप्रिय विधा अभिव्यक्त के ऐसे सशक्त माध्यम से कैसे अछूती रह सकती है। जरूर बहुत सी जगहों पर कजली संदर्भित हुई है।

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

iz'u % D;k dtyh mis{kk ;k [krjs esa gS\

mRrj % नहीं, खतरे में नहीं है। हाँ उपेक्षा का आभाव कहीं न कहीं जरूर परिलक्षित हो सकता है। पर यह चिन्ता की बात नहीं है। क्योंकि उपेक्षा नई ऊर्जा, नई चेतना का संचार करती है। एक तरफ अगर कोई फार्म मर रहा होता है तो वहीं दूसरी ओर उसी समय एक नया फार्म जन्म ले रहा होता है। इसका नयापन ही इसकी स्वीकृति बनती है। गाँव और बस्तियों में नये–नये संदर्भ पैदा हो रहे होते हैं। जिनसे नई–नई चीजों की उत्पत्ति हो रही होती है।

iz'u % dqN v[kkM+s <queQu;k vkj dtjh 'kk;jh ds lanHkZ esa crk;s\

mRrj % अखाड़ों का इतिहास और उनकी जवाबी और उनकी अलग कजरी उनके बीच उपजे विवाद और संवाद के माध्यम से विकास के नये रास्ते खोलती है। अखाड़े मूलतः स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा करते हुये कजरी के विकास में योगदान देते रहे। परस्पर जवाबी कजरी शायरी ने लोक के संदर्भ को और मजबूत किया। रात–रात भर कजरी शायरी के माध्यम से जवाबी शायरी होती थी। वाद–विवाद के संदर्भ पैदा होते थे, जो कि स्वस्थ लोकरंजक मनोरंजन के साथ संस्कृति का बीजारोपण भी करते थे और हमको हमारे समय के खतरे और चुनौतियों से निपटने का रास्ता भी बताते थे।

iz'u % dtjh dh lelkef;drk ds lanHkZ esa dqN dgs\

mRrj % जब तक विस्थापन है कजरी रहेगी। इसका परस्पर उत्तरोत्तर क्रमिक विकास होता रहेगा। आज यह गाँव देहातों में है, कल गाजियाबाद जा सकती है या किसी और बड़े शहर से जुड़ सकती है। क्योंकि दर्द के मूल में मनुष्य है, और मनुष्य के मूल में संवेदना है, तो जहाँ भी ऐसे संदर्भ आयेंगे और ये मिलना बिछुड़ना, प्रेम, मनुहार, आकर्षण ये सारे भाव होंगे वहाँ पर लोक विधा कजरी फिर एक नये विस्तार के साथ, नई सोच और ऊर्जा के साथ कला के पक्ष को मजबूत करेगी।

आपसे बातचीत के संदर्भ का वीडियो संलग्न है।

ykd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

ykd fo/kk dtyh dh mi;ksfxrk] egÙo] foLrkj ,oa lkekftd psruk ij lqifjfl) dtyh xk;dksa ls ckrphr

1- MkW0 eUuw ;kno Jhd".k

2- Jh lqxe yky pkS/kjh

3- Jh deys'k dqekj ;kno

4- Jh v'kksd jfl;k

5- Jh vHk; jkt ;kno

6- Jh deys'k pUnz ;kno

7- Jh xqykc pUnz

¼1½ MkW0 eUuw ;kno Jhd".k laf{kIr ifjp;

डॉ0 मन्नू यादव लोक विधा कजली गायिकी से पिछले दो दशकों से ज्यादा से जुड़े हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कई लोक महोत्सवों में तथा तमाम लोकप्रिय टी0वी0 चैनलों पर आपकी प्रस्तुतियाँ बराबर होती रही है। आप मूलतः बनारस में रहकर लोक विधा कजली की सेवा न सिर्फ अपनी प्रस्तुतियों से बल्कि तमाम नये कजली गायकों को प्रोत्साहन देकर भी कर रहे हैं। आपको देश की सर्वोच्च कला संगीत संस्थान 'संगीत नाटक अकादेमी' नई दिल्ली से उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ सम्मान भी प्राप्त हुआ है।

lk{kkRdkj

iz'u % ykd xkf;dh dtyh ds lanHkZ esa vki D;k dguk pkgsaxsA

mÙkj % भगवान श्री कृष्ण के काले कजरारे स्वरूप की सुन्दरता गोपियों ने महसूस की और अभिव्यक्त किया जो कि घनघोर काले बादलों के साथ बरखा के सुख की उत्पत्ति करता है, उसी कृष्ण बरखा, बादल, कजरारे नैन को उत्सव और महोत्सव का रूप

गीतों के माध्यम से दिया जाने लगा वहीं कालान्तर में कजरी के रूप में परिवर्तित हो गया। साथ ही माँ विन्ध्यवासिनी के भी काजल स्वरूप उपासना में गाये जाने वाले गीत भी कजरी होते गये साथ ही ऋतु गीत के रूप में रोपनी और श्रम साध्य कार्य के रूप में जो श्रम गीत हुये तथा काले बादलों के साथ बरखा की मेघ मे जो झूला गीत हुये वो भी कजरी ही हुये और इसकी विकास यात्रा सम्भवतः द्वापर युग से प्रतीत होती है। इसलिए की बार–बार श्याम, राधा, कन्हैया, बनवारी के टेक इसके अकाट्य मौखिक साक्ष्य है। साथ ही जो विरह और वेदना और विक्षोह का प्रसंग आता है उससे भी मन से गीत फूटते हैं और ऐसा सुहावना बरखा का मौसम टीस और पीड़ा को और बढ़ाता है तो अपने प्रिय की याद में कजरी गीत फूटते हैं।

i:'u % Lok/khurk vkUnksyu esa dtyh dh Hkwfedk D;k gSA

mRrj % 1857 की क्रान्ति या यूँ कहें की उग्र क्रान्ति के समय बनारस और अगल–बगल के घरानों में कजरी के गायक क्रान्तिकारियों के भीतर उत्साह और परिवर्तन का संचार कर रहे थे उन्हें जालिम अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ आन्दोलन हेतु तैयार कर रहे थे और अपने तमाम गीतों के माध्यम से राष्ट्रभक्ति और एकता की भावना को मजबूत कर रहे थे लिहाजा कजली विधा के माध्यम से अपने स्वतंत्रता आन्दोलन को कजली गायकों ने एक नये तरीके से सेवा कर राष्ट्र को स्वाधीनता की ओर उद्वेलित किया था। एक बड़ा विशेष उदाहरण है जैसे–

lR;] vfgalk] Lor= lRlx fgUnqLrku ls fudykA
Hkkjr dks eqlhdu ls fudyk uA
gjs jke ukxj u¸;k tyk dkys ifu;kA
js gfj ukxj tyk dkys ifu;k ukA

हरि नागर जिनकी की बनारस में बहुत ही दबंग और बाहुबली जैसी छवि थी वह बहुत ही अद्भुत क्रान्तिकारी थे और जब जिला बदर हुये तो मिर्जापुर भेज दिये गये तो उनको यह एहसास हुआ कि माँ भारती की सेवा तो मुझे करना ही है। लिहाजा, क्रान्तिकारियों की छुपकर भी और कई बार खुलकर भी मदद करने लगे। उनकी

प्रेमिका मनोहर जान जब उन्हें खोजते हुए मिर्जापुर आयी तब तक हरि नागर को काले पानी की सजा हो गयी थी, तो उन्होंने गाया

मिर्जापुर कइला गुलजार हो।
कचौड़ी गली सून कइला बलमू।
मिर्जापुर खोजली जहजिया।
पिया गये रंगून देश।
कचौड़ी गयी सून कइला बलमू।

और जब देश आजाद हुआ तो इसी तर्ज पर लगभग सभी फनकारों ने गाया कजली को एक नया रूप दिया।

तेग की धार बदल गयी।
गोरों की सरकार बदल गयी।
गौरी जुलूम अपार बदल गय।

iz'u % dtjh D;k flQZ ekSleh ykdxhr gS

mRrj % हाँ नहीं में उत्तर देना थोड़ा कठिन है, मगर यह जरूर सत्य है कि पारम्परिक रूप से असाढ़, सावन, भादों जो कि सामान्यतः अपने पूर्वांचल में बरसात का समय होता है। सावन भी आता है और तमाम तरह के तीज त्यौहारों का वक्त होता है। ऊपर काले घने मेध होते हैं, नीचे मन और मयूर खुलकर नाचते हैं, श्रम और धान की रोपाई का समय भी होता है। लीलाधर कृष्ण जन्माष्टमी भी होती है। प्रथम पूज्य गणेश को भी भादों में पूजा जाता है। तो ऐसा समय जिसमें चारो ओर उत्सव ही उत्सव है, प्रेम का संचार है, पर्यावरण है, हरियाली है, उत्साह उमंग और सर्जना का दौर है, तो जाहिर सी बात है कि कजली हर अवसर पर अपनी विविधता के साथ हमसे संवाद करती है। काले मेघ, घटा टोप अंधेरा, गरजते बादल, धुँआधार बारिस, ऐसे में मन से प्रेम, उत्सव, समर्पण, विरह के बोल जो फूटते हैं तो कजली का रूप लेते हैं। सिर्फ पूर्वांचल की ही बात नहीं है, राजस्थान में इसे हड़ोती के नाम से जाना जाता है। छत्तीसगढ़ में भुजाली के नाम से, बुन्देलखण्ड और उत्तराखण्ड में

झूला गीत के नाम से और अपने पूर्वांचल और अवध में विशेषतः मिर्जापुर, बनारस और प्रयागराज और अवध क्षेत्र में इसे कजली के रूप में जाना जाता है। यह सही है कि यह ऋतु के प्रसंग से सम्बन्धित है परन्तु कजली अपने समय का भी गान है और किसी एक विषय या ऋतु से यह सन्दर्भित नहीं है।

iz'u % dtyh dh lelkef;drk D;k gS\

mRrj % बहुत अच्छा प्रश्न आपने पूछा और मैं सच कहूँ तो आज कजली समय का गान है। कजली ने अपने भीतर अपने समय की चुनौतियों को अपने समय के उठते प्रश्नों को सम्मुख विडम्बनाओं को विसंगतियों को सदैव अभिव्यक्त किया है। अगर आपको याद हो तो कुछ बरस पहले एक फिल्म आयी थी पिपली लाईव और उसमें बहुत ही अच्छे तरीके से महँगाई पर प्रहार किया गया था। बोल कुछ इस तरह थे–

सखी सईयाँ तो बहुतय कमात है
महँगाई डायन खाये जात है।

और यह जो बोल थे इसका आधार मिर्जापुर, चकिया, चन्दौली, चुनार गाये जाने वाली कजली–

गोरी भूल गयी जलवा हजार में
सावन के बहार में ना।

सच कहँ तो भोजपुरी सिनेमा ने हिन्दी सिनेमा को भी समय–समय पर अपनी कजलियों से गुलजार किया हैं और नया रूप भी दिया है।

iz'u % dtyh dk vki D;k Hkfo"; ns[krs gS\

mRrj % कजली के समक्ष चुनौतियाँ अवश्य हैं पर इस बात का पूरा भरोसा है कि कजली अपने कठिन समय को भी पार कर लेगी। विज्ञान और विकास की चुनौतियाँ कब नहीं रही हैं जैसे आज डी0जे0 और आर्केस्ट्रा है, साथ ही पाश्चात्य संस्कृति का भी बोलबाला है, मगर फिर भी कजली हमारी परम्परा में है, हमारी जड़ों में है, हमारी जुबान पर है। लिहाजा हम डी0जे0 और आर्केस्ट्रा पर झूम तो सकते हैं पर शरीर की थिकरन मन और हृदय के साथ तो कजली से ही होती है। विद्वानों ने,

साहित्यकारों ने, लोकगायकों ने या यूँ कहे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अमीर खुसरो, बहादुर शाह जफर जैसों ने कला संस्कृति को बढ़ावा दिया और स्वयं भी एक कलाकार की भाँति कला साहत्य को समृद्ध किया तथा अपने साथ बड़े–बड़े गायकों को रखा जिन्होंने लोकगीतों की परम्परा को सदैव गाया और आगे बढ़ाया। जैसे कि आदिल शाह के दरबार में बच्चा सिंह। इन सभी ने ऋतु गीतों के माध्यम से अपने समय को अभिव्यक्त किया और कजली जैसी लोक संस्कृति को विकसित किया और उसको विस्तार भी दिया। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जहाँ पर अपने समय में राजाश्रय कलाकारों को मिलता रहा ताकि कला और संस्कृति की यह धारा कभी सूखे नहीं।

iz'u % 'kk;jh dtyh D;k gS\

mRrj % शायरी कजली में मुख्यतः एक अक्षर की कजली, दो अक्षर की कजली या तीन अक्षर की कजली, कला धर छन्द माधवी, छन्द बाहर आठ, अंग सुरंग चौबीस अंक, एक दोनों पक्षों में चौबीस बार को कान्हा और इसी तरीके से कजरी कैद बन्दिश, डबल ककहरा उल्टा ककहरा, अलग–अलग तरीके से कलाकार करते हैं और शायरी कजली में कलाकार एक–दूसरे को शायरी में ही जवाब देते हैं जैसे– महाभारत का प्रसंग शायरी कजली में गाया गया तो दूसरे को भी महाभारत का संदर्भ लेते हुए कजली में जवाब देना होगा। रामायण का होगा तो रामायण का संदर्भ कजली में आयेगा। छन्दों के पिंगल शास्त्र का भी प्रयोग कजली में होता है। सच पूँछिए तो कजली पूरे छन्द विधान और अनुशासन के साथ न सिर्फ लोगों का मनोरंजन करती है बल्कि समय के सच से उनका साक्षात्कार कराती है।

iz'u % <queqfu;k dtjh D;k gS\

उत्तर : ढुनमुनिया कजरी मुख्यतः बनारस की है जैसे लोटा को ढंग से हिला दिया तो वह लुढ़ने लगता है उसी तरीके से लोग गाते–गाते ऐक्शन में गोलों में घुमते रहते हैं और जो लीडर होता है वह भी धुमता रहता है वाद्य यंत्र वाले बीच में बैठे रहते हैं और हर ऐक्शन पर ऐक्शन करते हैं और जिस तरह लीडर ऐक्शन करता है, घुमता

है, रूकता है उसी तरह बाकी लोग भी उसका अनुसरण करते हैं। एक तरह से गायिकी के साथ–साथ हाव–भाव और प्रदर्शन का संगम करते हुए कजली को और प्रभावी किया जाता है।

i'u % vkidk ;kxnku vkj lok D;k gS dtyh ea\

mRrj % श्लेष जी, मैं हमेशा अपने हर मंच पर एक कजली जरूर गाता हूँ वह धुन गुनगुनाता हूँ, भले कोई मौसम हो, कोई अवसर हो, अपने मिर्जापुर और बनारस को विशेषतः अपनी सेवा के जरिये यथांकित करने का प्रयास करता हूँ। और रही बात योगदान की तो सामान्यतः जितने बड़े महोत्सव होते हैं कला संस्कृति के, यथा एन0सी0जेड0सी0सी0, जेड0सी0सी0, एस0जेड0सी0सी0 आदि संस्कृति मंत्रालय के संस्थान द्वारा आयोजित संस्कृति महोत्सव, आकाशवाणी, दूरदर्शन के महोत्सवों के द्वारा मैं कजली गायिकी प्राथमिकता के साथ गाता हूँ। 2012 में मॉरीसस और 2014 में भूटान में भी मैंने कजली गायी जिसे लोगों का अपार प्यार मिला। मेरी पुस्तक जो की कजली पर है मनसा, वह भी मैंने स्व0 गुरू रामधारी सिंह यादव द्वारा सिखाये गये छन्द विधान का प्रयोग करते हुये गायी है इसमें मैंने 200 कजली के कलाकारों, उनकी जीवन शैली, उनके बोल को संग्रहित किया है और मंच कोई भी हो मैं नई पीढ़ी को कजली की इस महान परम्परा से जोड़ना नहीं भूलता साथ ही मेरे सम्पर्क में आने वाले नये कलाकार गायक अगर सबसे पहले कुछ सीखते हैं तो वह लोक विधा कजली होती है।

ykd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

¼2½ laxe yky pkS/kjh dk laf{kIr ifjp;

श्री संगम चौधरी जिला कौशाम्बी उ0प्र0 के निवासी हैं। आपने साढ़े चार दशक से ज्यादा के लोक गायिकी के जीवन में लोक विधा कजली को गाकर उसकी प्रस्तुति देकर एवं उसकी सेवा कर कला के क्षेत्र में बड़ा काम किया है। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के आप वरिष्ठ फेलो (अध्येत्ता) रहे हैं। लोकगीत कजरी और लोक परम्परा पर आपका विशेष काम है। भारतीय लोक कला महासंघ के उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष के तौर पर लोक कलाओं और लोक कलाओं के संरक्षण, संवर्द्धन के लिए सतत् प्रयत्नीशील हैं। आपकी दिनचर्या में यह विशेष रूप से शामिल है कि अपने आस–पास के क्षेत्र में लोक कलाओं के प्रचार–प्रसार के लिये नित् जाते है और नई पौध को तैयार करते हैं।

lk{kkRdkj

iz'u % dtyh dk D;k vFkZ gS\

mRrj % लोक में कजली का अर्थ संदर्भ और तात्पर्य यही है कि यह विशेषतः ऋतु गीत है जो कि वर्षा ऋतु में गाया जाता है और अब इसमें सिर्फ प्रेम, मनुहार, मिलना बिछड़ना ही नहीं है बल्कि जैसे साहित्य के विधा में समय और काल का सन्दर्भ आता है वैसा ही कुछ अब कजली के साथ भी हो गया है। विशेष बात यह भी है कि कजली लोक पर्व है, सामाजिक समरसता है, पारिवारिक एकता है, ननद–भौजाई के मीठे सम्बन्ध और मीठी नोक–झोंक, माताओं बहनों का झूला झूलना, पति से झूठी नाराजगी, मीठे शिकवे शिकायतों के अभिव्यक्ति की अद्भुत विधा है कजली। जैसे उदाहरणार्थ–

yxk lkou cgkj
etsnkj fpjbZ;k

ykd fo/kk d t yh 'kks/k ,oa nLrkos thdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

ruh :iok r vkiu fn[kkbZ fngk uk

pys xxk th dk eyk

tgk gkbZ Byh&Byk

cMs ekds ls ckVs lqekj fpjbZ;k

इसके साथ ही अपने देवी–देवता, ईष्ट और ईश्वर को याद करना ही कजरी है जैसे–

ikoZrh egknso dk c;ku lqukA

tjk ?kj ds /;ku lquk ukA

:i dk<h dk cuk dA

igqps ljtw rV ij tkdA

ikoZrh cuh ijh ds leku uA

lquk tjk /;ku lA

ykx n[kus dk utj xkjk ls yMkoA

dgs pyk rEgs nco ?kj ex dke gkA

,d HkDr ogk vk;kA

f'ko dk xys ls yxk;kA

dk< NV x;kA

rlr mlh vku dkA

lquk tjk /;ku ls ukA

एक और प्रसंग देखें–

jkuh lrh lquk gkA

e>dk rk y{e.k us ekjk

pyk ds c.kok ukA

dS ls gkbZ ikj ftuxh

jeok ukA

ius % ljdkjks dh D;k Hkfedk nrs gS vki dtyh ds mUu;u es\

उत्तर : कजली के उन्नयन में सरकारों की भूमिका की सीधे–सीधे ऐसी कोई समीक्षा नहीं की जा सकती, पर हाँ, भूमिका सकारात्मक है, परन्तु इतना जरूर कहूँगा, एक पुराने गीत के बोल का सहारा लेकर–

FkkiMk gS FkkiM+ dh t:jr gSA

¼3½ deys'k pUnz ;kno dk laf{kIr ifjp;

श्री कमलेश चन्द्र यादव हण्डिया तहसील जिला प्रयागराज के निवासी हैं और लगभग ढ़ाई दशक से अधिक समय से लोक कला, लोकगीत, बिरहा एवं कजली के प्रति सम्पूर्ण भाव से समर्पित हैं। देश के अनेक हिस्सों में आपने बिरहा और कजली की बहुत सी प्रस्तुतियाँ दी है साथ ही आपने पारम्परिक लोकगीतों के संदर्भ को लेते हुए संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार की कई परियोजनाओं पर काम किया है। विशेष यह भी है कि आप भारतीय लोक कला महासंघ के उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष हैं तथा विभिन्न जनपदों में लोक कला एवं लोक गायिकी को लेकर के अनवरत सक्रिय रहते हैं। मुख्यतः कलाकारों को कला की संवदेना से जोड़ना एवं उनकी क्षमता वृद्धि करना इनका मुख्य कार्य है।

lk{kkRdkj

iz'u % dtyh ds dqN izdkj D;k gks ldrs gSa

mRrj % कजली के कई प्रकारों की बातें सामने आती है वह विशेषतः नाम के बजाय भाव पक्ष से जानी जाती है। कजली गीतों का संदर्भ और परिप्रेक्ष्य ज्यादा महत्वपूर्ण है। यथा– झूला गीत

>wyk iMk dne dh Mkjh
>wys d".k eqjkjh
vkvks lkFkh lwxh vkvks

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkothdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

ekjk ix r cpkjh&cpkjh

ngkrh xhr&

l[kh ';ke fcuk lu ekj Hkouok uk
vVdy ';kek e ekj ijuok gk uk

fojg onuk xhr&

fjef>e cjl yk lkouokA
ukfg ?kj vk; ltuokA
jLrk rkd bu;uokA
f?kj&f?kj vk; j cnjokA

<uefu;k&

ckjh mej dej ypdfu;kA
xkfj;k [khpj fugj d ifu;kA
xkjh d ckjh mefj;k ukA

v[kkM dh dtjh&

fetkij dbyk xyt kj gkA
dpkMh xyh lu dbyk cyeA

,d vkj mnkgj.k fuxj.k dk&

dby ukfg Hktu r ubgj
dyk xkjh vk; llfj;kA
dl rjc gk fpjkbA
mej tkb fcrk;A

प्रश्न : नये गायकों में कजली के प्रति क्या भाव है?

उत्तर : पूरी तरह से सम्मान का भाव है। क्योंकि कजरी उनके लिये ग्रामीण चेतना की अभिव्यक्ति है जो कि उनके भीतर के भाव से उत्पन्न हुई है। जरूरत है तो बस उसे तरासने की और उसको उसकी मौलिकता बरकरार रखते हुये उसको विकसित करने की।

yksd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

¼4½ v'kksd dqekj jfl;k dk lk{kkRdkj ifjp;

आप कौशाम्बी जिले के हैं और पिछले लगभग दो दशकों से अनवरत कजली की सेवा कर रहे हैं। आपकी कजली गायकी में मुख्यतः प्रेम, वात्सल्य की भावना के साथ–साथ समय की चुनौतियों का दर्शन भी होता है जिससे कि सहज ही लोग जुड़ जाते हैं। भारतीय लोक कला महासंध के कौशाम्बी जिला इकाई के आप अध्यक्ष हैं। और सतत् प्रयत्नशील हैं कि किस तरह इस प्रदर्शनकारी कला को और प्रचारित–प्रसारित किया जा सके तथा तमाम राष्ट्रीय और गरिमामयी मंचों से कजली को जोड़ा जा सकसे।

lk{kkRdkj

iz'u % dtyh D;k gS\

mRrj % कजली हमारी परम्परा है। कभी न खतम होने वाली संस्कृति है, कजली हमारी मौलिक अभिव्यक्ति है, सच कहूँ तो कजली सिर्फ गीत नहीं है, बल्कि मानव राग है।

iz'u % dtyh dh fofHkUurk;sa lgh gS\

mRrj % जी, बिल्कुल सही है, विभिन्नता हमें परस्पर सम्मान का भाव और विविधता प्रदान करती है। साथ ही एक दूसरे के साथ एक होने के संदर्भ को जोड़ती है। कजली की जो विभिन्नता है वह उसे और सुन्दर बनाती है और उसके विषय का विस्तार करती है।

iz'u % dqN mnkgj.k nhft,A

mRrj % जी, जैसे कि निर्गुण

dSls dgcs cye ls crh;k
jfr;k dgk¡ fcrmyh gkA
ftuxh pkj fnuk dk gmysA
dk&dk eksxs l tmyh gkA

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkothdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

mRlo] i e] eugkj&

dkugk cfux xknuk /kkjh

l[kh xknuk xknk; yk gkA

ngkrh&

/kkfr;k yb fngk dydfr;k

gjh gjh ifr;k ukA

fcjg&

l[kh jkoi u;uok l /kkjh

dUg;k dh ;kn vk jghA

यह कजरी अक्षर आधारित है और कहीं पर भी होठ जुड़ने वाले अक्षर नहीं आते हैं जैसे प, फ, ब, भ, म। एक और उदाहरण देखें–

भक्ति एवं विश्वास–

d".k tUe fy; jkr d v/kfj;k

ty d dkBfj;k ukA

vc rk gkbgk pgy vkj cl vtkfj;k

nf[kgk lofj;k ukA

xth pkjk vkj vc fdydfj;k

nf[kgk lofj;k ukA

gkbgk dl d foukl vc xtfj;k

n[kk gk lofj;k ukA

gkbgk mYykl dy uxfj;k

nf[kgk lofj;k ukA

Nbgk [k'kh dk ?kkj gk cnfj;k

nf[kgk lofj;k ukA

आपसे संवाद वीडियों के रूप में संलग्न है।

ykd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

¼5½ deys'k dqekj ;kno dk laf{kIr ifjp;

आप मूलतः प्रयागराज के यमुनापार क्षेत्र करछना के हैं तथा पिछले ढ़ाई दशकों से भी ज्यादा से आप लोक विधा कजरी और लोक गायिकी के प्रति समर्पित है। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार की कई परियोजनाओं में और कार्यक्रमों में आपने सहभाग किया है एवं अपनी प्रस्तुति दी है। भारतीय लोक कला महासंघ के साथ जुड़ कर आप लोक विधा कजली एवं लोक गायकी को और समृद्ध कर रहे हैं और नये कलाकारों को प्रोत्साहित भी कर रहे हैं।

lk{kkRdkj

iz'u % dtyh dk lanHkZ esa dqN crkb;s\

mRrj % कजली पारम्परिक लोकगीत है और ऋतु सन्दर्भित है भले ही इसके विषय वस्तु बहुत विभिन्नता लिये हैं। आज से 15–20 वर्ष पहले सुविख्यात जन कवि कैलाश गौतम जी के मार्गदर्शन में 84 प्रकार की कजलियों को लेकर हुये कार्यक्रम में मैंने भी अपनी प्रस्तुति दी थी और तभी यह जाना भी था कि कजली इतनी विभिन्नता और इतना विस्तार लिये भी हो सकती है। मैं गाता पहले भी था लेकिन शायद कजली के इस वृहद पक्ष से किसी हद तक अन्जान था। उदाहरण–

gfj fcu fojg c[kkus 0;kdqy

czt esa xqtfj;k rjlsa ukA

xksih xky cgkos vfl;k

ctb dc e/kqou esa cfl;kA

jfl;k jkl jpq fcu vxuk

dtfj;k rjlsa ukA

iz'u % D;k dtyh lekt lq/kkj Hkh dj ldrh gS\

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkothdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

mRrj % जी, बिल्कुल, कजरी में सदैव ही समाज में व्याप्त विसंगतियों, विडम्बनाओं को लक्षित किया गया है और उनके नकारात्मक पक्ष को नकारा गया है। समाज सुधार के लिये किये जाने वाले प्रयासों में कजली गायकों का बड़ा योगदान था क्योंकि उस दौर में सूचना और विज्ञापन के ऐसे माध्यम उपलब्ध नहीं थे, लिहाजा कलाकारों के अथक श्रम करके गाँव, गली, कस्बों तक सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ अलख जगाने का काम किया था और जनता को सही रास्ता दिखाया था। उदाहरण–

gmo' n[kk cMk gjtkb'
tkr dk xeku dc tkb' ukA
tcy' euok l' u tkb'
rcy' cf);k u vkbA

i'u % b'oj dk lUnfHkr dtfj;k Hkh cgr g] vki D;k dgr g\

mRrj % जी बिल्कुल, भारतीय संस्कृति परम्परा में ईश्वर के बिना किसी तरह की कल्पना बेईमानी है। उदाहरणार्थ–

सखी श्याम बिन सुन मोर भवनवा ना।

cky' nknj vkj ekj dj' te d n[kk 'kkjA
Hkkt gkr' ru e' c/k enuok ukA
euok >y&>y tk;] l/k&c/k Hkky&Hkky tk;A

ykd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

¼6½ xqykc pUn dk laf{kIr ifjp;

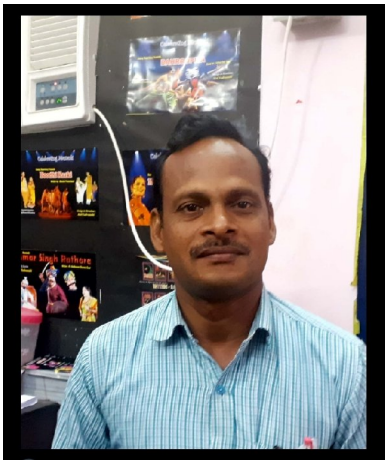

आप प्रयागराज के गंगापार क्षेत्र फूलपुर तहसील के निवासी हैं तथा लोक विधा कजली के माध्यम से और अपने संगीत निर्देशन के माध्यम से पिछले दो दशकों से भी ज्यादा से आपने लोक विधा कजली की सेवा की है और निरन्तर कर रहे हैं। आपने संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के कार्यक्रमों में भी अपनी प्रस्तुतियाँ दी है।

lk{kkRdkj

iz'u % xqykc pUn th vkids uke esa gh izd`fr gS rks D;k dtyh esa Hkh izd`fr dk n'kZu gS\

mRrj % जी बिल्कुल, कजली तो प्रकृति से ही निकली है। मौसम विशेष से आरम्भ हुई प्रकृति की गोद से निकली कजली आज जन–जन में व्याप्त है। हकीकत तो यही है कि अगर पर्यावरण ही नहीं होगा तो हम कजली कों इस उत्सव के रूप में मनायेंगे कैसे। जब वृक्ष नहीं होंगे, बरसात नहीं होगी, मोर नहीं नाचेंगे, हरी–भरी प्रकृति नहीं होगी तो उत्सव के स्वर कैसे फूटेंगे। आज तो कजली के विषय वस्तु में पर्यावरण बहुत प्रभावी ढंग से आ रहा है। जहाँ आस्था के साथ–साथ पर्यावरण के भी संतुलन का दर्शन है। यथा–

>wyk >wyk dne dh Mkjh
d".k eqjkjh ukA
lkou lst lu ?kj vkxu
dxuk yxs dVkjh ukA

,d fuxqZ.k Hkh ns[kk&

vkyjs vk<s tjk pnfj;k
tx esa vkor fd vkyjs
vk<s pnfj;k ukA

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkothdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

¼7½ vHk; jkt ;kno dk lf{klr ifjp;

eyrr% xxkikj bykgkckn d fuoklh fiNy nk n'kdk l Hkh vf/kd le; l mRrj in'k d fofHkUu tuinks e vkj vU; in'kk e viuh dtyh dh iLrfr;k nr jg gA ykd fo/kk dtyh dk ydj vkidh lonuk vkj i;kl ge'kk l jgk g vkj vkt Hkh yxHkx iR;d ep ij viuh iLrfr;k e vki ,d ;k nk dtyh t:j xkr g] fdlh u fdlh fo"k; vkj ToyUr lUnHkk dk ydj HkhA

lk{kkRdkj

i'u % D;k dguk pkgx dtyh d fo"k; e\

mRrj % dtyh rk Lo;a e ,d ,lk fo"k; g ftl ij ftruh ckr dh tk; de gA D;kfd _rq] io] mRlo] egkRlo dh xkn l fudyh ;g fo/kk vkt Økfur vkj tu pruk dk dke dj jgh gA dtyh dk fo"k; foLrkj bruk T;knk g fd ml fdlh Hkh lokn e lf{klrrk l vfHkO;Dr djuk vlHko gA dtyh gekjh ijEijk vkj gekjh lLdfr dk xku gA

i'u % dN mnkgj.k nhft,\

mRrj % vo';] nf[k;s uun&Hkkstkb dh ehBh NM&NkM ftle ifjokj vkj fj'rs dh feBkl gA ;Fkk&

dou jx eqxok
dou jx ekfr;k
dou gk jxok uk
uunh rkgjk fcjuok gk
dou jxok ukA

uun Hkkstkb d bl i'u ij dgrh g&

fi;j jx ekfr;k
lQn jx eqxok

ykd fo/kk dtyh 'kk/k ,o nLrkoth dj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

bgs go jixok uk
Hkk th gkmos ekj fcjuok
bgs jixok ukA

,d vkj mnkgj.k ns[ks fd fdl rjg gekjs ;gka Je dk eku&lEeku fn;k tkrk gS vkj ml egur dk mRlo dh rjg ft;k tkrk gS] ctk; fd fdlh rjg dh f'kdk;r djus dhA gekjh ;gh lLdfr lR;eo t;rs dh lnHkZ dk Je eo t;rs dh vkj ys tkrh gSA ;Fkk&

pyk /kku gks jkikok uk
lkouh Qqgkj ck uk
vk;y [krok es viu
cgkj ck ukA
pos Bki&Bki ilhuk
gkos /ki cfM+;kj uk
';ke tYnh ls Hkt n Qqgkj uk
cj[kk dk ckNkj gks ukA

lkFk gh fdl rjg ls ge viu ekle vkj mRlo dk thrs gS vkj viu b"V ds ek/;e ls ?kj ifjokj ds lkFk le; dk thrs gS blds Hkh mnkgj.k gS dtjhA ;Fkk ,d >wyk xhr&

gjs jkek >wyk iMk dne dh Mkjh
>wys d".k ejkjh ukA
jk/kk >wys yfyrk >wys
>wys lf[k;k lkjh ukA

,d vkj mnkgj.k ns[ks&

eb;k nck gea dc njluok uk
vVdy ck gekj ijuok ukA
p<y tkr ck b tkj ls
louok ukA

yksd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

dtyh dk _rq cks/k] ijEijk&iz;ksx&iz lkafxdrk dk 'kks/k lanHkZ

dtjh

dgok¡ ls vkoyk gks dq¡oj dUgS;k iMys yk
>hj&>hj cqfu;k] gs xb;k¡ dgok¡ ls vkos
jk/kk jfu;k¡ iMys yk iMys yk >hj&>hj cqfu;k

xksdqy ls vkoyk gks dq¡vj dUgS;k iMys yk
>hj&>hj cqfu;k] gs xb;k¡ cfjluok ls vkos
jk/kk jfu;k¡ iMxk iMys yk >hj&>hj cqfu;k

dsdj yky gmos gks dq¡vj dUgS;k iMys yk
>hj&>hj cqfu;k] gs xb;k¡ dsdj ykyh gmos
jk/kk jfu;k¡ iMys yk iMys yk >hj&>hj cqfu;k

uUn yky gmos gks dq¡vj dUgS;k iMys yk
>hj&>hj cqfu;k] o"kekuq ykyh gmos
jk/kk jfu;k¡ iMys yk >hj&>hj cqfu;k

dmus gmos gks dq¡vj dUgS;k iMys yk
>hj&>hj cqfu;k] gs xb;k¡ dmus gmos
jk/kk jfu;k¡ iMys yk >hj&>hj cqfu;k

';ke cju gmos gks dq¡vj dUgS;k iMys yk
>hj&>hj cqfu;k] gs xb;k¡ xmjs cju gmos
jk/kk jfu;k¡ iMys yk >hj&>hj cqfu;k

dtjh

lbZ;k lkou esa >qyok Mjkr ck
esgnh jpkr ck uk

ifMgS cfx;u esa >wyk&ykfx gS lf[k;u ds esyk
lc ls feys cns ft;jk NNkr ck
esgnh jpkr ck uk

fjef>e cfjls cnfj;k & l[kh xkoSyh dtfj;k
lkbZ;k nsf[k&nsf[k ft;k ygjkr ck
esgnh jpkr ck uk

nknqj cksys ifigk cksys&vkS dksbfy;k jlok ?kksys
eks[kk uSyksyk eksfjfu;k ytkr c
esgnh jpkr ck uk

fVdqy /kkuh&/kkuh pqfj;k ifgjs /kkuh js pqufj;k
ijns'kh ekFks lUgqjk lksgkr c
esgnh jpkr ck uk

yksd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

dtjh

lq/k gejh dkgs Hkqykbyk ';ke
rsj djr cM+ nsj HkbZ
ekr firk dj Qsn NksM+kbZ
fn;ks ds'k dks LoxZ iBkbZ
[kqyr xsn lqjkoj tkbZ
ukFk ukx dkfyng vUnj
vki dey fyvbyk ';ke
'kj.k 'kj.k nkSinh iqdkjh
jgs n'kklu djr m?kkjh
Hk;ks lgk; vk; cuokjh
[khpr phj n'kklu gkjk
nsj vEcj ds dbyk ';ke
Mqcr c`t tyls rsg volj
u"k ij fxj/kj /kkj;ks fxj/kj
=kfg =kfg Fkh c`t es ?kj ?kj
p<;ks fj lkbZ bUnz tcs
vki lgk;h rc Hkbyk ';ke

dtjh

Hkko Hkk; jVr dVr larki
jVr tks f'ko 'kadj gfjgj
jgs iki dk Dys'k ;gha
nsrs gSa eks{k 'kadj
gfj 'kadj ds uke xksgjk; nk
nsou ds nso egknso ds cksyk; nk uk----

xksjh ds euk; js laofj;k
iqj.k djks vk'kk e; ttuh
g`n; vdqyku js laofj;k
gjflr eu nsoh oj nhUgh
/khj mj vku js laofj;k
dkey nksÅ ldqekj vo/k ds
lHkk eSa y[kku js laofj;k

rksjh cksy dlsyh ck js
ekjs ftxfj;k ifigk ikih lkou eSa
fo"k ls Hkjh rqEgkjh csu
lqukr ?kj fn;k u pSu

yksd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

dtjh

cbekuu esa cMk cbekuk ck mgs ikfdLrku ck uk

ge r nksLrh fuHkkok&mr Nqjk ybds vkok
gejs ihBs ek ?kko fu'kuk ck] mgs ikfdLrku ck uk

dgs viuas ds ikd cMk ckVs [krjukd
djsl dkjfxy esa ;q} ?kekluk ck] mgs ikfdLrku ck uk

lsuk fngsl tu ngkM+ & [kk;sl /kksfc;k iNkM+
viuas djuks is rcks u ytku ck] mgs ikfdLrku ck uk

xok vejhdk vksj phu] dgs enrks u dhu
ns[kl vbuk egqs dkfj[kk iksrku ck] mgs ikfdLrku ck uk

budj djks u fo'okl dle [kk;s lks ipkl
pkys gFkok esa ybds dqjku ck] mgs ikfdLrku ck uk

veu 'kkfUr ds ckr & budk rfudks u lksgkr
buds egqoks esa nbZ&nbZ tqcku ck] mgs ikfdLrku ck uk
ns'k fgr esa ftvc& ns'k fgr esa ejc
viuas nslok is tku dqjcku ck] mgs ikfdLrku ck uk

ykd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

dtjh

fej tkiqj dbyk xqytkj gks
dpkSMh xyh lqu dbyk cyeq

gkbZ fej tkiqjok ls mByh tgft;k
pfy xbyh lh/ks jxwu gks dpkSMh xyh-----

ifj;k ls ikrj Hkbyh ekSjk vaxfu;k
nfg;k xyyh tbls tkus gks dpkSMh xyh-----

jkxok ds eje uk tkus oS|ok
ykxy lfjfj;k esa ?kqu gks dpkSMh xyh-----

iuok yxkor lqjr rksjk lkcq
dkVs yxy xyok esa pqu gks dpkSMh xyh-----

ykd fo/kk dtyh 'kks/k ,o nLrkost hdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

dtjh

eqg nkuo ngst Qsyk;] fcfV;k dbls ckQ fcnk gks
nqygk fcxls yxys xqmok] vkj 'kgfj;k uk
eqgxh rkMs gmos lHkks ds defj;k ukA

myV xbyck rkj rjhdk] vblu yxy leb;k gks
jhr Hkby foijhr btjk es /ku ykHkh gj Bb;k gkA

vkdjk cxyk xkMh pkgh tsdjk jgs ds ukgh Bsdkuk
vkdjk lqUnj nqyfgu pkgh tsdj ybdk gmos dkuk
ftud lk&lks iqmnk ykxy ck ixfM;k uk
eqgxh rkMs gmos lHkks ds defj;k uk

tsdj fcfV;k C;kg xbyck mgks cMk gjku vgs
jktk Qkus ls vkos /kedh] lqu lqu ds ijs'kku vgs

gejk pkj yk[k Hkks tokok ukfg vkiu fcfV;k ybtk
cVh ds ftuxh tk pgk] ?kjok rs pjifg;krs nbtk
ukfg bgÅ ykxh vkxh cgq ds lfj;k uk
eqgxh rkMs gmos lHkks ds defj;k uk

tsdjs xkys pkmj ckVs m uk ckys lk>k gks
Å dk ckyh tmu ncy u eqgxkbs ds ck>k gks

dtjh

fi;k eSgnh fyvkbnk ekrh >hy ls
tk; ds lk;fdy ls uk

fi;k eSgnh fyvkok]NkVh uunh ls filkok
gejs gFkok es yxkok dkVk dhy l] tk; d----

b go lfo'uk cgkj] rkjk ckr u gekj
douk Qk;nk u fudyh nyhy l] tk; d----

idM+ ybl ckxoku] l tk gkbl tk pyku
rkgds yM+ ds NkM+bc ge odhy l] tk; d----

yksd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

dtjh

>wyk iM+k dne dh Mkjh
>wys jk/kk uoy fd'kksj

Hkhuh Hkhuh ijr Qqgkjs] Nkbl ?kVk ?ku?kksj
Mkjh&Mkjh cksys dks;fy ;k] cu cu ukpr eksj

pUnu dk ef.k tfM+r fgMksyk] js'ke yksxh Mksj
>wys jk/kk Hkkxu nqykjh] >wyor uUn fd'kksj

>fd >qd ixs c<+or eksgu] yf[k yf[k jk/kk vksj
mM+r uhy iV vl ihrkEcj] 'khry iou dk 'kksj

cgqy yksMyh eksgs Mj yksxr] dks ihre fprdksj
jktk eu yf[k vuqie tksjh] vkor iqe fgyksj

yksd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkostshdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

dtjh

lf[k;k [ksyS pyyh ?kj ls vkt dtfj;k ns[kk
dS dS d rb;fj;k ns[kk ukk

dbyh dqy lksjgks flaxkj] dktj nsgyh vaf[k;k Qkj
ns[k ns[k lc dj /kkuh jax pqufj;k ns[kk
ygjs nkj fdufj;k ns[kk ukA

tsruS dly cUgy gkS vax] vkSruS eu esa [kq'kh
tnqvk Mkjs gal ds vaf[k;k chp iqrfj;k ns[kk
iku Qqy le Mfj;k ns[kk ukA

dtjh [kSys cuk ds Vksyh dkVS pqVdh djS fBBkSjh
gal ds vksB nckcS frjNh djS utfj;k ns[kk
ygk ykSV gfj;kfj;k ns[kk ukA

yksd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

dtjh ¼nqyefu;k½

gfj;j&gfj;j [ksr fd;kjh] /kjrh ifgjs /kkuh lkjh
fjef>e fjef>e >jS] cnjk Qqgkj lf[k;k
pkjks vksjh NkbZ] cj[kk cgkj lf[k;k

ukps eksj dksbfy;k cksyS] >hy rky ygjkyS
gjgj gjgj >ju cksyS] isM+ igkM+ ugkyS
uhd yksxS ns[kk ufn;k dNkj lf[k;k

xkao xyh esa dtjh xwats] xwats cus flokus
cw<Å ckck HkkbZ l pjkoS] ns[kk Nkrk rkus
lcds euok es?kok ergkj lf[k;k

dgha dcMMh [kjiV lVVk vksrgk ikrh gkyk
>wyqvk ns[kk iM+r nqvkj] >wyS Vksyh Vksyk
?kjs ?kjs gmos vkby frgqokj lf[k;k

yksd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k

(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

dtjh ¼o"kkZ ?kVkVksi½

fjef>e cjlsys cnfj;k] xbZ;k xkosys dtfj;k
Hkkoj lofj;k Hkhts uk] vkgh ?kuok ds fd;fj;k
eksj lofj;k Hkhts uk---------

Hkjys rryok ikS[kfj;k] ukps pqYgok eNfj;k
Hkkoj utfj;k Hkhtsuk] Hkhts vf[k;k dk iqrfj;k
eksj utfj;k Hkhts uk---------

yxky u[kr vnjok nsa[kq nsa[kq jsa cnok
eksj c[kfj;k Hkhtsuk] Hkhts dkBok vVfj;k
eksj c[kfj;k Hkhts uk---------

Hkbys gfj;j f[kouok] ykVs Hkqb;k eas louok
eksj pqufj;k Hkhts uk] Hkhtsu lb;kq dixfj;k
eksj pqufj;k Hkhts uk

Hkhts efx;k dk lsUnqjok Hkhts lkjgks flxjok
Qqyofj; Hkhts uk] lb;kq [kksy u dsofj;k
Qqyofj; Hkhts uk
Hkhts nq/kok ds dVksfj;k] eksj fefl;j Hkhts uk

yksd fo/kk dtyh 'kks/k ,oa nLrkosthdj.k
(अमूल्य भारतीय लोक विरासत)

[;ky dh dtjh

lxqu pqufj;k dj tYnh rS;kj js jxjstok
lt /kt ds tkos llqjkj js jxjstok
fi;k dh ikrh irs /kMds
gk; js ft;jk eksj gks
tkÅxh tc ise uxj esa
jkg esa fefygsa pkj gks
ubgj dh lc ekjh dekbZ
yb tbgsa lc Nkj gks
lkl uun lc rkuk efjgsa
ykxc dmuks vkj gks
blfy, rks es dgrh fnynkj js] jxjstok

xqu dk xguk ue dh uFkjh
ysc vkBks vax lokj
yxu ds yVdu eu ds ekrh
xys chp yV dbcs gkj
ek;k eksg ds ekgu ekyk
ifgj ysc lqUnj uxnkj
g;k ds glqyh Hkko dh ckts
pqr dh pkyh cVnkj
:fp&:fp ds djcs lkjgk J`xkj js] jxjstok

ykd fo/kk dtyh ds o`gn v/;;u ,oa 'kks/kksijkUr fo'ks"k lefdr fVIi.kh ,oa fu"d"k

कजली के संदर्भ में यही कहा जा सकता है कि कजली भी आदिम राग है। अपने समय का राग है, अपनी चुनौतियों से जूझने का नाम है। समय और काल से मुठभेड़ करती हुई लोक चेतना, लोक परम्परा का नाम है। इसका उदय या जन्म अवश्य ऋतुओं से हुआ है परन्तु यह ऋतुओं तक ही सीमित नहीं है।

कजली को ऋतुओं के संदर्भ से सीमित करके देखना, उसको छोटा करने और सीमित करने के बराबर होगा। कजली मौसमों से निकल कर जिन्दगी में आये और आने वाले हर आँधी, तूफान, विपदा को अभिव्यक्त करने का नाम है। प्रेम, विक्षोह, वात्सल्य जैसी भावनाओं के मूल से उपजी कजली हालॉकि विस्थापन का मौलिक स्वर है परन्तु अपने विकास के क्रम में कजली ने तमाम सीमाओं को तोड़ा और वक्त और हालात के कठिन प्रश्नों को हल करने का प्रयास करती हुई दिखाई दी।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन और स्वाधीनता की चेतना, चेतना के स्वर को कजली ने बहुत दम के साथ, बहुत हौसले के साथ आगे बढ़ाया। एक ओर जहाँ अस्त्र–शस्त्र भौतिक युद्ध के काम आ रहे थे वहीं कजली हमको मानसिक अस्त्र–शस्त्र से मजबूत कर रही थी। जो काम तलवार, भाले, गोलियाँ, तोप कर सकते थे वही काम राष्ट्रीय चेतना और स्वाधीनता से ओत प्रोत कजलियों ने अपनी प्रस्तुति, अपने बोल, अपने कथ्य के माध्यम से बराबर कर रही थी। कहने का आशय यह कि कजली भी राष्ट्रीय आन्दोलन में अपनी भूमिका के साथ उपस्थित थी और अपनी जन स्वीकृति के माध्यम से जनता के बीच पराधीनता के खिलाफ और स्वतंत्रता के पक्ष में एक सकारात्मक उर्जात्मक माहौल बना रही थी।

साथ ही साथ सामाजिक चेतना साम्प्रदायिक सद्भाव, सामाजिक सुधार की भावना को कजली स्वर दे रही थी। कजली के माध्यम से सामाजिक विद्रूपताओं से बराबर लड़ाई करने का हौसला सभी को प्राप्त हो रहा था। आप देख सकते हैं कि सामाजिक सुधार के इस दौर में किस तरह से कजली अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से सामाजिक बुराइयों का

शमन कर रही थी और उसके खिलाफ समाज में आन्दोलन और बदलाव की भूमिका लिख रही थी। कजरी का यह योगदान निश्चित रूप से समाज की सार्थक चेतना और बदलाव के लिये बहुत जरूरी थी। समाज में सकारात्मक परिवर्तन की भावना के साथ कजली ने देश और समाज की अनुपम सेवा की।

कजली का जो दर्शन है वह भी अद्‌भुत है, हमें तमाम तरह की लोभ लालच और बुराइयों से अगाह करती है और यह हमेशा बताती रहती है कि यह शरीर अच्छे कार्यों के लिये बना है किसी की बुराई करने के लिये या किसी का बुरा करने के लिये नहीं। बल्कि मन और हृदय से स्वच्छ रहते हुये कैसे हम ईश्वर को याद करते हुये अपनी जिन्दगी को सार्थक तरीके से जी सकते हैं और अपने आस पास के माहौल को और सर्जनात्मक और सकारात्मक बना सकते हैं।

शरीर को स्वस्थ रखते हुये उससे अच्छे कार्य लेने की प्रेरणा हमें यह लोक विधा देती है और सदैव सचेत करती है कि हम अमरत्व को प्राप्त नहीं हैं लिहाजा जब तक इस धरती पर हैं कुछ अच्छे कार्यों और उद्‌देश्यों के लिये हम हैं और किसी भी दिन तनरूपी पिंजरे से जीवनरूपी तोता उड़ सकता है लिहाजा मिले हुये समय को व्यर्थ न करते हुये उसे सेवा, परोपकार और अच्छे कार्यों में लगाते रहें। आप कह सकते हैं कि तन और मन की सुन्दरता को किस तरह से सामाजिक बदलाव, सामाजिक चेतना के लिये इस्तेमाल किया जा सकता है इसका बोध भी हमें कजरी कराती है।

समेकित टिप्पणी और निष्कर्ष पर आते हुये यह कहना चाहूँगा कि विनम्रता पूर्वक कजरी को जानने समझने और अभिव्यक्त करने का एक प्रयास किया गया है क्योंकि कजरी स्वयं में एक प्रेम और ईश्वर की तरह है जिसे पूरी तरह से किसी एक शोध या पुस्तक में अभिव्यक्त कर देना लगभग असम्भव है। हाँ, यह प्रयास जरूर किया गया कि जितना हो सके उतने विस्तृत तरीके से इसकी विवेचना और इसके विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण हो सके। इसकी सामाजिक उपादेयता का उल्लेख हो सके। इसके प्रकार और इसकी विभिन्नताओं की चर्चा हो सके। यही कहना चाहूँगा यह कहते हुये कि 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता'। कजली भी अनन्तराग और सम्भावनायें अपने आप में समेटे हुये है एक विस्तृत

परम्परा और इतिहास के साथ–साथ लिहाजा परम्परा, प्रयोग, प्रासंगिकता और इसकी कालजयिता को समग्र रूप में रखने का यह प्रयास है। यह शोध, यह अध्ययन वह पूरी वैचारिकी है जहाँ विभिन्न तरह के स्रोतों से कजली को जानने समझने और अभिव्यक्त करने का समुचित प्रयास किया गया है।

लोक विधा कजली परम्परा और ऋतु के संदर्भ से निकलकर आज जीवन का राग गा रही है और समय–समय पर हमारी अर्न्तचेतना का जागृत करने का काम कर रही है।